E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -12 अंक-23 | प्रयागराज, शनिवार 28 मार्च, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी 10-10 रुपए घटाई,कंपनियां दाम बढ़ा सकती थीं, इसे रोकने के लिए फैसला

नयी दिल्ली। सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में 10-10 रुपए की कटौती कर दी है। पेट्रोल पर ड्यूटी रु13 रुपए प्रति लीटर से घटाकर रु3 रुपए, जबकि डीजल पर रु10 से शून्य कर दी गई है। न्यूज एजेंसी पीटीआई ने यह जानकारी दी। यूएस-इजराइल के साथ ईरान की जंग के चलते अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम 73 डॉलर से बढ़कर 105 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गए हैं। इससे तेल कंपनियों को घाटा हो रहा था। घाटा कवर करने के लिए तेल कंपनियां दाम बढ़ा सकती थीं। एक्साइज ड्यूटी घटाकर पेट्रोल-डीजल के दामों को स्थिर रखा गया है। कटौती का असर 7 सवालों के जवाब से समझें- सवाल 1: सरकार ने एक्साइज ड्यूटी में कितनी कटौती की है? जवाबः न्यूज एजेंसी के मुताबिक, सरकार ने पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी में रु10 की कमी की है, जिससे अब यह घटकर रु3 प्रति लीटर रह गई है। वहीं, डीजल पर भी रु10 की कटौती की गई है, जिससे अब डीजल पर लगने वाली एक्साइज ड्यूटी जीरो (0) हो गई है। सवाल 2: क्या कल से पेट्रोल-

डीजल के दाम रु10 कम हो जाएंगे? नहीं, इसकी संभावना कम है। भले ही सरकार ने टैक्स कम किया है, लेकिन पेट्रोल-डीजल के रिटेल रेट सीधे सरकार तय नहीं करती। इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम जैसी तेल कंपनियां कच्चे तेल की कीमत और अपने मुनाफे के आधार पर रेट तय करती हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि कंपनियां इस छूट का इस्तेमाल अपने पिछले घाटे की भरपाई के लिए करेंगी। सवाल 3: तेल कंपनियां दाम क्यों नहीं घटाना चाहतीं? जवाबः इसका मुख्य कारण कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें हैं। पिछले कुछ हफ्तों से वेस्ट एशिया में चल रहे तनाव के कारण तेल कंपनियां महंगा क्रूड खरीद रही थीं, लेकिन उन्होंने घरेलू बाजार में दाम नहीं बढ़ाए थे। कंपनियां अब इस टैक्स कटौती का इस्तेमाल उस नुकसान को कवर करने और अपने मार्जिन को स्थिर करने में करेंगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक तेल कंपनियां फिलहाल पेट्रोल पर 24 रुपए प्रति लीटर और डीजल पर 30 रुपए प्रति लीटर का घाटा सह रही हैं। सवाल 4. प्राइवेट कंपनियां क्या रुख अपना रही हैं? जवाबः प्राइवेट प्लेयर पहले ही दबाव में हैं। सरकार के इस फैसले से ठीक एक दिन पहले ही नायरा एनर्जी ने पेट्रोल रु5 प्रति लीटर और डीजल रु3 महंगा कर दिया था। अब भोपाल में इस कंपनी का पेट्रोल 111.72 रुपए और डीजल 94.88 रुपए पर पहुंच गया है।। इससे साफ है कि प्राइवेट प्लेयर्स के लिए मौजूदा रेट पर तेल बेचना मुश्किल हो रहा है।सवाल 5: क्या भविष्य में दाम और बढ़ सकते हैं? जवाबः यह पूरी तरह से ग्लोबल मार्केट पर निर्भर है। ब्रेंट क्रूड फिलहाल 100 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर ट्रेड कर रहा है। अगर वेस्ट एशिया में तनाव और बढ़ता है और सप्लाई चेन बाधित होती है, तो कच्चे तेल की कीमतें और ऊपर जा सकती हैं।**आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..**

सरकार बोली- देश में लॉकडाउन नहीं लगेगा,डर का माहौल न बनाएं

नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा है कि देश में

लॉकडाउन नहीं लगेगा। उन्होंने संसद के बाहर कहा- हालात काबू में हैं। पीएम मोदी खुद स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने भी कहा कि लॉकडाउन को लेकर फैल रही अफवाहें पूरी तरह गलत हैं। डर का माहौल न बनाएं। सरकार का ऐसा कोई इरादा नहीं है। प्रधानमंत्री ने चार दिन पहले संसद में कहा था कि इस युद्ध के कारण दुनिया में जो कठिन हालात बने हैं, उनका प्रभाव लंबे समय तक बने रहने की आशंका है। इसलिए हमें तैयार रहना होगा। हम कोरोना के समय भी एकजुटता से ऐसी चुनौतियों का सामना कर चुके हैं। प्रधानमंत्री बीती शाम सभी मुख्यमंत्रियों से बात भी हुई. लॉकडाउन के सवाल पर रिजिजू का पूरा बयान पढ़िए- सवालः क्या देश में लॉकडाउन लगने वाला है?जवाबः नहीं, नहीं, ये सब कौन अफवाह उड़ा रहा है। पीएम ने साफ तौर पर कहा था कि पैनिक नहीं होना है। जमाखोरियों को चेतावनी दी है। राज्य सरकारों से कहा है कि कोई भी होर्डिंग न करे। भारत सरकार के कंट्रोल में पूरी स्थिति है। आम लोगों को तकलीफ न हो इसके लिए टॉप लेवल से लेकर नीचे लेवल तक यहां तक कि पीएम खुद मॉनीटर कर रहे हैं।

सेना 800किमी रेंज वाली ब्रह्मोस क्रूज-मिसाइल खरीदेगी,अभी 450किमी तक निशाना साधने वाली मिसाइल मौजूद

नयी दिल्ली। भारतीय सेना 800 किमी से ज्यादा रेंज वाली देखते हुए सेना बड़े पैमाने पर ड्रोन और मिसाइल शामिल कर

ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल खरीदने की तैयारी में है। फिलहाल सेना के पास 450 किमी तक मारक क्षमता वाली ब्रह्मोस मिसाइल मौजूद है। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक, रक्षा अधिकारियों ने बताया कि सेना इस नए वर्जन का बड़ा ऑर्डर देने की योजना बना रही है। रक्षा मंत्रालय की उच्चस्तरीय बैठक में इस प्रस्ताव को जल्द मंजूरी मिल सकती है। मई 2025 में भारत-पाकिस्तान जंग के दौरान ऑपरेशन सिंदूर में ब्रह्मोस मिसाइल का इस्तेमाल किया गया था। भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान एयरफोर्स के कई ठिकानों को निशाना बनाया था।अब 800 किमी की रेंज वाले नई मिसाइलों के आने के बाद दिल्ली से ही पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद को निशाना बनाया जा सकेगा। दिल्ली और इस्लामाबाद की हवाई दूरी 700 किमी है।भारतीय सेना एक समर्पित मिसाइल फोर्स बनाने और मिसाइलों की संख्या बढ़ाने पर काम कर रही है। सेना अपने वर्कशॉप में ड्रोन का बड़े पैमाने पर निर्माण भी कर रही है। अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जारी जंग ने लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों की अहमियत को और बढ़ा दिया है। नई पीढ़ी के युद्ध को रही है। इसके तहत आर्टिलरी और इन्फैंट्री यूनिट्स में स्पेशल ड्रोन रेजिमेंट और प्लाटून बनाए जा रहे हैं। भारत-रूस का संयुक्त प्रोजेक्ट है ब्रह्मोस-ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल भारत और रूस का संयुक्त प्रोजेक्ट है, जिसका अधिकांश हिस्सा अब स्वदेशी हो चुका है। यह मिसाइल तीनों सेनाओं के पास है और इसे हवा, समुद्र और जमीन से हमले के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ब्रह्मोस को भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन और रूस के फेडरल स्टेट यूनिटरी इंटरप्राइज के बीच साझा समझौते के तहत विकसित किया गया है। ब्रह्मोस एक मध्यम श्रेणी की स्टील्थ रैमजेट सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है। इस मिसाइल को जहाज, पनडुब्बी, एयरक्राफ्ट या फिर धरती से लॉन्च किया जा सकता है। रक्षा विभाग के अधिकारियों के मुताबिक, ब्रह्मोस का नाम भगवान ब्रह्मा के ताकतवर शस्त्र ब्रह्मास्त्र के नाम पर दिया गया। हालांकि कुछ रिपोर्ट्स में ये भी दावा किया गया है कि इस मिसाइल का नाम दो नदियों भारत की ब्रह्मपुत्र और रूस की मोस्कवा नदी के नाम पर रखा गया है। ऐसा माना जाता है कि ये एंटी-शिप क्रूज मिसाइल के रूप में दुनिया में सबसे तेज है।

पेट्रोल पंपों पर लगी लाइनें गोंडा में धक्का-मुक्की,सरकार बोली- अफवाह फैलाने वालों पर एक्शन लेंगे

लखनऊ। यूपी में पेट्रोल पंपों

पर लाइनें लगी हैं। तेल खत्म होने की अफवाह के चलते तीसरे दिन यानी शुक्रवार को भी लोग बड़े-बड़े डिब्बे और ड्रम लेकर पेट्रोल-डीजल भरवाने पहुंच रहे हैं। भीड़ की वजह से घंटों इंतजार भी कर रहे हैं। लखनऊ के कठौता चौराहे पर पेट्रोल-डीजल के लिए 500 मीटर लंबी लाइन लगी है। गोंडा के धानेपुर में एक पेट्रोल पंप पर डीजल लेने के लिए जमकर धक्का-मुक्की हुई। आगे पहुंचने के चक्कर में कुछ लोगों ने एक-दूसरे को खींचकर लाइन से बाहर निकाला। योगी सरकार ने गुरुवार को साफ किया कि ईंधन की आपूर्ति पूरी तरह सामान्य है। पेट्रोल-डीजल को लेकर किसी भी तरह की चिंता की जरूरत नहीं है। स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। प्रमुख सचिव खाद्य एवं रसद विभाग रणवीर प्रसाद ने बताया- कहीं भी संकट जैसी स्थिति नहीं है। सभी जिलों में मांग के अनुसार, पेट्रोल-डीजल उपलब्ध कराया जा रहा है। अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। प्रदेश में करीब 13,168 पेट्रोल पंप चल रहे हैं। पंप मालिकों का कहना है कि अचानक 3 से 4 गुना तक भीड़ बढ़ गई। उन्हें समझ में भी नहीं आ रहा कि तेल पर्याप्त होने के बावजूद ऐसा क्यों हो रहा।सरकार ने यह भी कहा- अनावश्यक रूप से ईंधन का भंडारण करने से आपूर्ति व्यवस्था पर दबाव पड़ता है। इसलिए आम लोग संयम बरतें और सामान्य जरूरत के अनुसार ही खरीदारी करें। प्रदेश सरकार ने भरोसा दिलाया है कि आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी है। पेट्रोल-डीजल को लेकर किसी भी तरह की चिंता की जरूरत नहीं है और स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। लखनऊ पेट्रोल डीलर एसोसिएशन के सदस्य एवं एसआर फिलिंग स्टेशन (इंजीनियरिंग कॉलेज) के मालिक सर्वेश वाजपेई ने कहा- पेट्रोल एवं डीजल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पंप 24 घंटे सुचारू रूप से संचालित हैं। लोगों को घबराकर डीजल-पेट्रोल स्टोर करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

लखनऊ-कानपुर समेत 8 जिलों में बारिश,ठंडी हवाएं चल रहीं,5 दिन बिगड़ा रहेगा मौसम

लखनऊ। यूपी में मौसम बिगड़ गया है। शुक्रवार सुबह लखनऊ,

सीतापुर, बरेली और संभल में हल्की बारिश हुई। सुबह 10.30 बजे के बाद प्रयागराज, कानपुर और उन्नाव में बारिश शुरू हुई। नोएडा, आगरा और मेरठ समेत 10 जिलों में बादल छाए हैं। 30 किमी की रफ्तार से हवाएं चल रही हैं। आज 38 जिलों में बारिश का अलर्ट है। मौसम विभाग के मुताबिक, पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टर्बेंस) के असर से मौसम बदला है। अगले 5 दिनों तक मौसम बिगड़ा ही रहेगा। कहीं-कहीं ओले गिर सकते हैं। आंधी भी चलेगी। पिछले 24 घंटे की बात करें तो प्रदेश के औसत तापमान में 5°C तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। बांदा सबसे गर्म रहा, यहां अधिकतम तापमान 40.2°C रहा। सबसे कम तापमान मुजफ्फरनगर में 15.4°C रिकॉर्ड किया गया। लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक अतुल सिंह ने बताया- 'पाकिस्तान से आ रहीं हवाओं ने यूपी में प्रवेश किया। इससेबूंदाबांदी की शुरुआत हुई। 29 मार्च को दूसरा विक्षोभ सक्रिय होगा। इससे पूरे प्रदेश में अच्छी बारिश होगी। 40-50 की रफ्तार से हवा चलेगी। 3°C तक पारा गिरेगा।' अगले 5 दिन कैसा रहेगा मौसम? 28 मार्च - पश्चिमी और पूर्वी यूपी के ज्यादातर इलाकों में मौसम साफ रहेगा। कुछ इलाकों में बौछारें पड़ सकती हैं। 29 मार्च - पश्चिमी यूपी में गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ सकती हैं। कुछ जगहों पर बिजली गिरने की भी आशंका है। 30 मार्च - पूरे प्रदेश में गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होगी। कुछ जगहों पर तेज बारिश भी हो सकती है। आंधी भी चल सकती है। 31 मार्च - पश्चिमी यूपी में बौछारें पड़ेंगी। पूर्वी यूपी में अच्छी बारिश हो सकती है। 30-40 किमी की रफ्तार से हवा चलेगी।1 अप्रैल- पश्चिमी यूपी में मौसम साफ रहेगा। पूर्वी यूपी में गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है।

रामलला का सूर्य तिलक, 9 मिनट ललाट पर पड़ीं किरणें,अयोध्या पहुंचे लाखो श्रद्धालु

अयोध्या। अयोध्या में रामनवमी पर शुक्रवार दोपहर 12 बजे अभिजीत मुहूर्त में रामलला का सूर्य तिलक हुआ। 9 मिनट का भोग लगाया गया। सूर्य तिलक के लिए अष्टधातु के 20 पाइप से 65 फीट लंबा सिस्टम (स्ट्रक्चर) बनाया गया है। 4 लेंस और 4

तक भगवान के ललाट पर नीली किरणें पड़ीं। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद रामलला का यह दूसरा सूर्य तिलक है। पीएम मोदी ने टीवी पर इसे लाइव देखा। सूर्य तिलक के साथ ही रामलला का जन्म हो गया। इस दौरान 14 पुजारी गर्भगृह में मौजूद रहे। उन्होंने विशेष पूजा और आरती की। सूर्य तिलक के बाद कुछ देर के लिए मंदिर के पट बंद कर दिए गए। रामलला को 56 तरह के व्यंजन मिरर के जरिए गर्भगृह तक रामलला के मस्तक पर किरणें पहुंचाई गईं। गर्भगृह को फूलों से सजाया गया है। सुबह 5.30 बजे रामलला को पीतांबर पहनाया गया। फिर आरती की गई। आज आम दिनों के मुकाबले भक्त 3 घंटे ज्यादा रामलला के दर्शन कर पाएंगे। सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक यानी 18 घंटे दर्शन होंगे। पहले सुबह 6:30 से रात 9:30 तक दर्शन होते थे।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा में खामेनेई की तस्वीर लेकर प्रदर्शन,बीजेपी-कांग्रेस विधायकों में भी विवाद/हाथापाई

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में शुक्रवार को ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला सदन की कार्यवाही कुछ देर के लिए स्थगित कर दी गई।इजराइल ने ईरान पर 28 फरवरी को हमला

अली खामेनेई की मौत को लेकर प्रदर्शन हुआ। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता खामेनेई की तस्वीर लेकर सदन के अंदर पहुंचे और समर्थन में नारेबाजी की। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेताओं ने खामेनेई के पोस्टर भी लहराए। इस बीच, सदन में कांग्रेस और बीजेपी नेताओं के बीच धक्का-मुक्की का भी वीडियो सामने आया। हालांकि, ये विवाद भाजपा नेताओं के राहुल पर कमेंट को लेकर था।दरअसल कांग्रेस विधायक इरफान हाफिज पीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ नारे लगा रहे थे। जवाब में भाजपा विधायक युद्धवीर सेठी ने कहा, राहुल गांधी पप्पू हैं। इसके बाद दोनों नेताओं में हाथापाई होने लगी। साथी मेंबर्स ने बीच-बचाव किया। इसके बाद किया था। इन्हीं हमलों में अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो गई थी।नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायक तनवीर सादिक ने कहा, हम ईरान के साथ खड़े हैं। हमारी पार्टी और जम्मू-कश्मीर की सरकार उनके साथ खड़ी है। जैसे सीएम उमर अब्दुल्ला ने पिछली बार सिविल सोसाइटी में अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या की निंदा की थी। वैसे ही, आज हम सब यहां खड़े हैं। हम समझते हैं कि जिस तरह से खामेनेई को मारा गया, किसी भी देश को दूसरे देश पर हमला करने का कोई हक नहीं है। मुझे लगता है कि देश की टॉप लीडरशिप को इसकी निंदा करनी चाहिए। हम ईरान के लोगों का सपोर्ट कर रहे हैं।

ईरान में जंग के लिए 10 लाख सैनिक तैयार,जमीनी लड़ाई की तैयारी, सेना में युवाओं की भर्ती तेज हुई

तेहरान। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के बीच ईरान ने 10 लाख से ज्यादा ग्राउंड सैनिक जुटाने का दावा

किया है। ईरानी मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका जमीनी हमला कर सकता है। इसके चलते युवाओं में सेना में भर्ती की होड़ बढ़ गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, हाल के दिनों में बड़ी संख्या में युवा बसीज, रिवोल्यूशनरी गार्ड और सेना में शामिल होने के लिए आवेदन कर रहे हैं। वहीं, अमेरिका मिडिल ईस्ट में करीब 10,000 एक्स्ट्रा सैनिक भेजने पर विचार कर रहा है। वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार, रक्षा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस फोर्स में पैदल सेना और बख्तरबंद गाड़ियां शामिल हो सकती हैं।यह एक्स्ट्रा सैनिक मिडिल ईस्ट में पहले से मौजूद 5,000 मरीन और 2,000 पैराट्रूपर्स के साथ जोड़े जाएंगे। ये पैराट्रूपर्स 82वीं एयरबोर्न डिवीजन से हैं। ईरानी मीडिया ने तेहरान, कोम और उर्मिया के आवासीय क्षेत्रों पर रात में हुए हमले की सूचना दी। इसमें कई लोगों के घायल होने की खबर है।ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने ट्रम्प की टिप्पणी पर जवाब देते हुए कहा कि उनके देश ने मिडिल ईस्ट में ईरान के खिलाफ युद्ध को लेकर अमेरिका की किसी भी मदद के अनुरोध को ठुकराया नहीं है। यह बयान उस समय आया जब ट्रम्प ने कैबिनेट बैठक में ऑस्ट्रेलिया के रुख पर निराशा जताते हुए कहा था, 'ऑस्ट्रेलिया अच्छा नहीं रहा, मैं थोड़ा हैरान हूं।' ऑस्ट्रेलिया ने इस महीने की शुरुआत में संयुक्त अरब अमीरात के अनुरोध पर रॉयल ऑस्ट्रेलियन एयर फोर्स का ई-7ए वेजटेल निगरानी विमान क्षेत्र में भेजा था, ताकि ईरान की ओर से हो रहे मिसाइल हमलों से निपटने में मदद मिल सके।हालांकि, जब ट्रम्प ने होर्मुज से गुजरने वाले टैंकरों की सुरक्षा के लिए सहयोग मांगा, तो ऑस्ट्रेलिया ने कहा कि वह इसमें हिस्सा नहीं लेगा, क्योंकि उसे इस बारे में सीधा अनुरोध नहीं मिला था। बाद में ऑस्ट्रेलिया 22 देशों के उस समूह में शामिल हो गया, जिसने तेल की बढ़ती कीमतों के बीच समुद्री मार्ग को सुरक्षित बनाने के लिए संभावित मिशन की योजना पर सहमति जताई। शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में अल्बनीज ने कहा कि उनका ट्रम्प के साथ अच्छा संबंध रहा है, लेकिन उन्होंने ऐसा कोई अनुरोध नहीं था, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने मानने से इनकार किया हो।' उन्होंने यह भी कहा कि ईरान पर हमले से पहले अमेरिका और इजराइल ने अपने सहयोगियों से कोई सलाह-मशविरा नहीं किया था और ऑस्ट्रेलिया अपनी प्रतिक्रिया खुद तय करता है।

एमपी में बिजली की दरें 4.80फीसदी बढ़ीं,एक अप्रैल से लागू होंगे नए रेट, दिन में ईवी चार्ज करने पर 20 प्रतिशत छूट

जबलपुर। मध्य प्रदेश में बिजली की दरों में 4.8 प्रतिशत

की बढ़ोतरी कर दी गई है। नए रेट एक अप्रैल से लागू होंगे। राज्य विद्युत नियामक आयोग ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए नया टैरिफ आदेश जारी कर दिया है। इसके मुताबिक, इस बार घरेलू, गैर-घरेलू, औद्योगिक और कृषि श्रेणियों के लिए अलग-अलग दरें तय की गई हैं। नए टैरिफ आदेश में लो टेंशन उपभोक्ताओं को राहत मिली है, जिनके लिए न्यूनतम शुल्क समाप्त कर दिया गया है। घरेलू उपभोक्ताओं के लिए पहले की तरह स्लैब सिस्टम लागू रहेगा, जिसमें कम खपत पर कम और अधिक खपत पर ज्यादा दर से बिल लिया जाएगा। वहीं, गैर-घरेलू उपभोक्ताओं के लिए लोड और खपत के आधार पर रेट लगेगा। इंडस्ट्रियल कस्टमर के लिए स्थायी शुल्क और ऊर्जा शुल्क अलग-अलग तय किए गए हैं जबकि कृषि उपभोक्ताओं को चरणबद्ध दरों के अनुसार बिजली उपलब्ध कराई जाएगी। इलेक्ट्रिक व्हीकल को बढ़ावा देने के लिए भी नए टैरिक आदेश में विशेष प्रावधान किए गए हैं। इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग स्टेशनों पर सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक बिजली उपयोग पर 20फीसदी की छूट मिलेगी जबकि दूसरे समय में 20फीसदी अतिरिक्त शुल्क देना होगा। कंपनियों ने गिनाए बढ़ोतरी के कारण-बिजली कंपनियों का कहना है कि उनकी आर्थिक हालत बहुत खराब है और वे बहुत बड़े घाटे में चल रही हैं। संचित घाटाः प्रदेश की तीनों बिजली वितरण कंपनियां (पूर्व क्षेत्र, मध्य क्षेत्र और पश्चिम क्षेत्र) कुल मिलाकर 42,375 करोड़ रुपए के भारी घाटे में हैं यानी पुराने सालों का जमा हुआ नुकसान बहुत ज्यादा है। पुराने प्रस्ताव अस्वीकारः कंपनियों का दावा है कि 2014-15 से 2022-23 तक उनके द्वारा मांगे गए 3,451 करोड़ रुपए के बढ़ोतरी प्रस्तावों को राज्य विद्युत नियामक आयोग ने मंजूर नहीं किया। इससे उनकी वित्तीय स्थिति और बिगड़ गई है। स्मार्ट मीटर का खर्चः स्मार्ट मीटर लगाने पर 820 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। अब कंपनियां इस खर्च को भी उपभोक्ताओं से वसूलना चाहती हैं।बिजली खरीद का अतिरिक्त खर्चः बिजली खरीदने पर लगभग 300 करोड़ रुपए का अतिरिक्त खर्च बताया गया है।

केन्द्रीय कांग्रेस कार्यालय में आज से सात दिनों तक बहेगी भागवत कथा गंगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। स्वामी स्वात्मानंद जी महाराज (असनी आश्रम) फतेहपुर द्वारा 26 मार्च से 01 अप्रैल 2026 भागवत कथा सुनाई जाएगी। यजमान अवधेश कुमार शुक्ला (सोनू),राम जी शुक्ला, इं0 के.सी. शुक्ला द्वारा आज प्रातः 10 बजे कलश यात्रा निकाली गई, जिसमे शहर के गणमान्य लोगों द्वारा प्रतिभाग किया गया। सायंकाल 5.00 बजे महाराज जी का आगमन हुआ,जिनका विधिवत् पूजन कर ब्यास गद्दी पर विराजमान कराया गया।

प्रयागराज (नैनी) में सजा 'इन्फ्लुएंसर्स मीटअप 2026' का मंच-डिजिटल यूथ के स्टाइल और आत्मविश्वास का भव्य उत्सव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। संगम नगरी प्रयागराज के नैनी क्षेत्र में आयोजित इन्फ्लुएंसर्स मीटअप 2026 युवाओं के जोश, रचनात्मकता और फैशन सेंस का शानदार संगम बनकर उभरा। यह आयोजन केवल एक फैशन इवेंट नहीं, बल्कि डिजिटल युग में युवाओं की बढ़ती पहचान और प्रभाव का प्रतीक साबित हुआ। कार्यक्रम का आयोजन आधुनिक समाचार के कैंपस में हुआ, जहाँ हर पल ऊर्जा, उत्साह और क्रिएटिविटी से भरा नजर आया।इस भव्य आयोजन को सफल बनाने की जिम्मेदारी आरडीएक्स इवेंट टीम ने बेहद शानदार तरीके से निभाई। साथ ही, अनेक सहयोगियों का योगदान भी सराहनीय रहा, जिनकी मदद से यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में पहली बार इस स्तर पर सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शामिल युवा

इन्फ्लुएंसर्स ने अपने अनोखे स्टाइल, आत्मविश्वास और दमदार प्रस्तुति से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने यह साबित किया कि आज के दौर में फैशन केवल ट्रेंड नहीं, बल्कि खुद को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बन चुका है। इस खास अवसर का सबसे आकर्षक क्षण रहा-'बेस्ट ड्रेस्ड डिजिटल यूथ अवॉर्ड' जिसमें उन प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया जिन्होंने अपने पहनावे के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और आत्मविश्वास से एक अलग पहचान बनाई। बेस्ट ड्रेस्ड डिजिटल यूथ विनर्स (Top 6) आयुषी शुक्ला, सुहानी द्विवेदी, जागृति सिंह, अवानी सिंह राजपूत, आस्था, श्वेता पांडेय, इन सभी विजेताओं ने अपने स्टाइल और आत्मविश्वास से यह संदेश दिया कि असली फैशन कपड़ों में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और आत्मविश्वास में झलकता है। यह आयोजन न सिर्फ एक इवेंट रहा, बल्कि उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए एक नई शुरुआत और प्रेरणा का स्रोत बन गया- जहाँ स्टाइल के साथ-साथ आत्मविश्वास और पहचान को भी मंच मिला।

बौद्ध श्रामणेरों व बौद्ध आचार्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। बोधिसत्व डॉ भीमराव अम्बेडकर मेमोरियल स्कूल भीमी में गत दिनों आयोजित बौद्ध श्रामणेरों व बौद्धाचार्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रबंधक रामसमुझ बौद्ध ने किया। उन्होंने इस दौरान उक्त कार्यक्रम में हुए आय व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रमुख उपस्थित लोगों में बौद्ध धर्म गुर भंते धम्म दीप भुपियामऊ, भंते धम्म दीप नुवावां, अम्बेडकर कल्याण समिति अमेठी के अध्यक्ष धर्मेंद्र बौद्ध, ओमप्रकाश गौतम जिलाध्यक्ष सुल्तानपुर शिवहर्ष मास्टर श्यामलाल पूरे केसरी हरिश्चंद्र उर्फ हरीश मास्टर कंधई राम जेठूपुर रामफल फौजी सचिव सिरमौर बुद्ध विहार गंगौली (सोइया) इन्द्र पाल गौतम रामअभिलाष बौद्ध सदस्य जिला पंचायत नम्रता जायसवाल के प्रतिनिधि मुंशी जी श्याम सुंदर जायसवाल गुरुप्रसाद बौद्धाचार्य, आशा बौद्ध, रामकुमार, विजय कुमार साधूराम, किशोरी लाल, नीरज बौद्ध व के पी सविता बौद्ध पूर्व प्रधानाध्यापक एवं रचयिता बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य और महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा 30 प्र0 शाखा जनपद अमेठी आदि रहे।

तेल संकट के बीच सरकार का बड़ा दांवः पेट्रोल-डीजल सस्ता,ईरान-इजराइल तनाव के बीच पेट्रोल-डीजल पर राहत

केंद्र सरकार ने एक्साइज ड्यूटी में बड़ी कटौती की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव, विशेषकर ईरान से जुड़े हालातों के बीच देश में पेट्रोल और डीजल की आपूर्ति पर दबाव बढ़ने लगा था।इसी बीच केंद्र सरकार ने आम जनता को राहत देते हुए पेट्रोल और डीजल पर एक्साइज ड्यूटी में बड़ी कटौती का ऐलान किया है। सरकार के नए आदेश के अनुसार पेट्रोल पर एक्साइज ड्यूटी 13 रुपये प्रति लीटर से घटाकर 3 रुपये प्रति लीटर कर दी गई है।

वहीं डीजल पर लगने वाली 10 रुपये प्रति लीटर की एक्साइज ड्यूटी को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है।

सरकार का यह फैसला ऐसे समय में आया है जब वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखी जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड की कीमत करीब 1 प्रतिशत गिरकर 107 डॉलर प्रति बैरल पर आ गई है, जबकि अमेरिकी कच्चा तेल भी लगभग 1 प्रतिशत गिरकर 93.60 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सकारात्मक बयानों से पश्चिम एशिया के तनाव को लेकर बाजार की चिंताएं कुछ कम हुई हैं,

जिसका असर तेल की कीमतों पर पड़ा है।

सरकार के इस कदम से देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में राहत मिलने की उम्मीद है, जिससे परिवहन लागत कम हो सकती है और महंगाई पर भी काबू पाने में मदद मिलेगी।

योगी को कानपुर की बच्ची ने बुलडोजर टॉय दिया,गिफ्ट लेकर सीएम हंस पड़े,फिर पांव भी पखारे

गोरखपुर। सीएम योगी को शुक्रवार सुबह गोरखपुर में 5 साल की बच्ची ने बुलडोजर टॉय गिफ्ट किया। गोरखनाथ मंदिर में पहुंचे योगी ने बुलडोजर लेकर बच्ची के साथ फोटो खिंचवाई। फिर बच्ची से कहा- इसे अपने साथ ले जाओ। मन लगाकर पढ़ाई करना। बच्ची का नाम यशस्विनी सिंह है। वह परिवार के साथ कानपुर से गोरखनाथ मंदिर आई थी। इसके बाद योगी ने रामनवमी पर मां सिद्धिदात्री की आराधना कर 9 कन्याओं के पांव पखारे। योगी ने बुलडोजर टॉय गिफ्ट करने वाली यशस्विनी के भी पांव पखारे। चुनरी ओढ़ाई और तिलक लगाया। फिर सभी कन्याओं को भोजन कराकर उपहार दिए। यशस्विनी ने कहा- मुझे बुलडोजर पसंद है, इसलिए सीएम को दिया। पापा ने बुलडोजर खरीदा था। जब मैंने बुलडोजर दिया तो योगीजी ने कहा कि इसे खेलना और खूब पढ़ाई करना। बच्ची ने कहा- मैं ट्रेन में बैठी और मम्मी-पापा के साथ यहां पहुंची। बहुत दूर से आई हूं। यशस्विनी सिंह कानपुर के प्रताप इंटरनेशनल कॉलेज में नर्सरी की छात्रा हैं। वह अपने पिता अभय सिंह राजावत और मां प्रियदम्वा सिंह के साथ गोरखपुर आई थीं।

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICI

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

सोनभद्रः रामनवमी के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शुक्रवार को सोनभद्र नगर के मध्य स्थित राम जानकी मंदिर से श्री राम दरबार अखाड़ा समिति द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी रामनवमी के शुभ अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा अपने निर्धारित मार्ग से श्री राम जानकी मंदिर विजयगढ़ पेट्रोल पंप से प्रारंभ होकर में चौक होते हुए धर्मशाला चौक, धर्मशाला से चदी तरह होते हुए में चौक में, चौक से बरौली चौराहा, बरौली चौराहे से कचहरी होते हुए महिला थाना, महिला थाना से वापस राम जानकी मंदिर पर समापन किया गया। इससे पूर्व दोपहर 12:00 बजे भगवान राम का जन्म उत्सव मनाया गया, जिसमें समिति के लोगों द्वारा भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। उसके पश्चात किन्नर समुदाय के लोगों द्वारा बधाई गीत का प्रस्तुति की गई। उसके बाद ठीक दोपहर 3:00 बजे से भगवान राम दरबार की भव्य झांकी श्री राम दरबार अखाड़ा समिति द्वारा पूरे नगर में भ्रमण करने के लिए निकल गई। यात्रा का शुभारंभ भगवान राम की शोभा यात्रा में पूरे नगर वासियों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा की, फल वितरण किया, मिष्ठान वितरण किया, सरवत पिलाकर राम भक्तों का स्वागत किया। इस अवसर पर शिव शंकर, राहुल, भूपेश चौबे, अजीत चौबे, धर्मराज सिंह, आलोक सिंह, रमेश पटेल, मनीष खंडेवाला, राहुल, दया शंकर सिंह, शीतला सिंह, पूर्व विधायक अविनाश कुशवाहा, कमलेश चौबे, नरेंद्र गर्ग, अनिल, मनोज जलन, सुनील सिंह, रविंद्र केसरी, नवल बाजपेई, पवन जैन, प्रकाश श्रीवास्तव, तन्मय त्रिपाठी, अनुपम त्रिमती, मनीष अग्रहरि, श्याम उमर, अखिलेश कश्यप, महेश सोनी, रवी केसरी, विनोद सोनी, पुष्पा, गुड़िया, मंजू, रूबी, रंजन किरण, कृपा शकर चौहान आदि उपस्थित रहे।

राइजिंग चाइल्ड स्कूल में ग्रेजुएशन समारोह आयोजित, गाउन में सजे बच्चों को किया गया सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहर के प्रभुटाउन स्थित राइजिंग चाइल्ड स्कूल का ग्रेजुएशन समारोह भव्यता के साथ संपन्न हुआ। दो चरणों में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन न्यायिक मजिस्ट्रेट कृति किशोर, पी. आर. माथुर एवं नेहा शुक्ला द्वारा संयुक्त रूप से माँ सरस्वती जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। विद्यालय के प्रबंधक अरविंद श्रीवास्तव, एडवोकेट ने आए हुए अतिथियों एवं अभिभावकों का स्वागत किया। प्रधानाचार्या सीमा श्रीवास्तव ने विद्यालय की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षा प्रदान करते हुए बच्चों के समग्र एवं बहुआयामी विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि विद्यालय में शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता एवं व्यक्तित्व विकास पर विशेष बल दिया जाता है, ताकि छात्र-छात्राएं भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकें। समारोह में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट पवन कुमार सिंह, समाजसेवी आशीष प्रताप सिंह, सिविल जज स्वप्निल पांडेय, अपर जिलाधिकारी अमृता सिंह, सिविल जज अमित मिश्रा, जुडिशल मजिस्ट्रेट खैरुन्निसा, क्षेत्राधिकारी प्रदीप कुमार, रोटरी क्लब के अध्यक्ष रजनीश कपूर, सचिव सचिन मल्होत्रा, नवीन मल्होत्रा, एफ. जी. डिग्री कॉलेज के प्रबंधन मंत्री अतुल भार्गव, धीरज श्रीवास्तव, इनरव्हील क्लब से निधि मल्होत्रा, सतीश श्रीवास्तव, सहायक अभियंता रेलवे अरुण मिश्रा तथा आईसीआईसीआई बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक रोहित मिश्रा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रह कर बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए। विद्यालय में अगली कक्षा के लिए उत्तीर्ण एवं पदोन्नत हुए छात्र-छात्राओं को ग्रेजुएशन गाउन एवं कैप पहनाकर जैसे ही प्रमाण-पत्र एवं परीक्षा परिणाम वितरित किए गए, बच्चों की खुशी देखते ही बन रही थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आदित्य वीर, तिश्या, आराध्या, आर्याश, शिवांग, रक्षित, वेदांश, अविशा, उत्कर्ष, युवराज, खुशी, अजेय, वरदान, अदिति, प्रारब्ध, मानस, अर्यंतिका, मोक्षिता, धृति, तबीबा, मिशिका, यशस्वी, अथर्व सहित अन्य मेधावी विद्यार्थियों को विद्यालय द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी रवींद्रनाथ हरि सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं का सहयोग सराहनीय रहा।

सपा नोएडा महानगर ने सम्राट अशोक की जयंती मनाई

29 मार्च को दादरी में होने वाली राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की रैली की तैयारी के लिए किया भव्य बैठक का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सपा नोएडा महानगर द्वारा

महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता की अध्यक्षता में नोएडा सेक्टर 121 में सम्राट अशोक की जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर सभी नेताओं ने सम्राट अशोक के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता ने कहा कि सम्राट अशोक मौर्य साम्राज्य के महान शासक थे। उन्होंने न केवल विशाल भारत पर शासन किया, बल्कि बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रदेश सचिव भारत प्रधान व राकेश यादव ने कहा कि सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद अहिंसा और शांति का मार्ग अपनाया और समाज को सद्भाव, न्याय तथा सहिष्णुता का संदेश दिया। प्रदेश सचिव सुनील चौधरी व मुकेश यादव ने कहा कि सम्राट अशोक मौर्य वंश के तीसरे शासक थे। वे चंद्रगुप्त मौर्य के पौत्र और बिंदुसार के पुत्र थे। उपाध्यक्ष मोहम्मद नौशाद ,मुकेश वाल्मीकि वह विधानसभा अध्यक्ष बबलू चौहान ने कहा कि अशोक द्वारा स्थापित 'धम्म' नीति मानवता, करुणा और नैतिक मूल्यों पर आधारित थी, जो आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। साथी साथ इस बैठक में दादरी में 29 मार्च को होने वाले माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी की रैली को सफल बनाने के लिए गहन विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम का संचालन महासचिव विकास यादव के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में नोएडा महानगर के सभी वरिष्ठ नेता ,पदाधिकारी, प्रकोष्ठ के अध्यक्ष और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नोएडा सेक्टर 19 के बारात घर में, 29 मार्च की भाईचारा रैली को सफल बनाने के लिए सुनील चौधरी द्वारा किया गया विशाल जनसभा का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)नोएडा। सेक्टर 19 के बारात घर मे प्रदेश सचिव व पूर्व

प्रत्याशी सुनील चौधरी के द्वारा 29 मार्च को गौतमबुद्ध नगर के दादरी में प्रस्तावित समाजवादी समानता भाईचारा रैली की तैयारियों को लेकर विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। सभा में क्षेत्र के लोगों ने भाग लिया और अधिक से अधिक संख्या में रैली में पहुंचकर उसे सफल बनाने का संकल्प लिया। जनसभा के आयोजक सपा के प्रदेश सचिव वह पूर्व प्रत्याशी सुनील चौधरी रहे। सभा को संबोधित करते हुए रैली के संयोजक राजकुमार भाटी ने कहा कि यह रैली सामाजिक एकता और भाईचारे का संदेश देगी। पूर्व मंत्री जावेद आब्दी ने लोगों से बड़ी संख्या में भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। जिला अध्यक्ष सुधीर भाटी और पूर्व लोकसभा प्रत्याशी महेंद्र नगर ने भी रैली की महत्ता बताते हुए इसे ऐतिहासिक बनाने का आह्वान किया। उपस्थित सभी वक्ताओं ने एकजुट होकर समाज में समानता और भाईचारे को मजबूत करने पर जोर दिया। इस विशाल जनसभा के संयोजक प्रदेश सचिव सुनील चौधरी ने कहा कि समाजवादी पार्टी (सपा) एक बार फिर पश्चिमी उत्तर प्रदेश से अपने चुनावी अभियान की शुरुआत करने जा रही है। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव 29 मार्च को गौतमबुद्ध नगर के दादरी स्थित मिहिर भोज डिग्री कॉलेज में आयोजित होने वाली सद्भावना रैली के जरिए चुनावी आगाज करेंगे। इस रैली को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है।इससे पहले वर्ष 2011 में भी अखिलेश यादव ने अपनी चर्चित 'साइकिल यात्रा' की शुरुआत गौतमबुद्ध नगर से ही की थी। उस यात्रा के माध्यम से उन्होंने पूरे उत्तर प्रदेश का दौरा किया था, जिसका राजनीतिक असर यह हुआ कि 2012 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को बहुमत मिला और प्रदेश में सपा की सरकार बनी। पूर्व जिला अध्यक्ष वीर सिंह यादव व फकीरचंद नगर ने कहा कि ऐसे में एक बार फिर उसी धरती से चुनावी अभियान की शुरुआत को पार्टी के लिए शुभ संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

सर्वोदय शांति पदयात्रा मैहर पहुंची

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। पूज्य डॉ. मणिभद्र मुनि महाराज

जी के सानिध्य में निकली सर्वोदय शांति पदयात्रा मां शारदा के पावन धाम मैहर पहुंची, जहां श्रद्धालुओं ने भव्य स्वागत किया। यह पदयात्रा पोखरा से प्रारंभ होकर छत्तीसगढ़ के दुर्ग तक जाएगी। यात्रा का शुभारंभ 6 जनवरी को हुआ था तथा 6 फरवरी को लुंबिनी से भारत में प्रवेश किया। यात्रा गोरखपुर, वाराणसी होते हुए मध्य प्रदेश के मऊगंज पहुंचकर मैहर आई। मैहर में पदयात्रा का स्वागत अपर सत्र न्यायाधीश आदेश जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर मैहर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने पूज्य मुनि श्री से मुलाकात कर यात्रा के संबंध में चर्चा की और आशीर्वाद प्राप्त किया। आगे यह पदयात्रा कटनी और जबलपुर की ओर प्रस्थान करेगी। 31 मार्च को कटनी में महावीर जयंती मनाई जाएगी, जबकि 7 अप्रैल को पदयात्रा जबलपुर पहुंचेगी। महाराज जी का मुख्य आदेश है की क्या लेकर आए हैं क्या लेकर जाएंगे मानव मिलन और मानव सेवा प्रमुख उद्देश्य है।

थाली में जहर?' मैहर की 'बीकानेर एक्सप्रेस' पर बड़ा आरोप, खाने में कीड़े मिलने का वीडियो वायरल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। शहर में खाने के नाम पर आखिर परोसा क्या जा रहा है? यह सवाल तब खड़ा हो गया जब मैहर की चर्चित दुकान 'बीकानेर एक्सप्रेस' पर गंभीर आरोप लगे हैं कि वहां ग्राहकों को दिए जा रहे खाने में कीड़े तक मिल रहे हैं। सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो ने पूरे शहर में सनसनी फैला दी है। वीडियो में साफ तौर पर दावा किया जा रहा है कि एक ग्राहक को परोसे गए खाद्य पदार्थ में कीड़े पाए गए। यह कोई छोटी लापरवाही नहीं, बल्कि सीधे-सीधे लोगों की सेहत से खिलवाड़ है। वीडियो वायरल, लेकिन जिम्मेदार कौन? पीड़ित ग्राहक ने खुद वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाला और प्रशासन से कार्रवाई की मांग की। लेकिन सवाल यह है कि- क्या खाद्य विभाग सो रहा है? क्या बिना जांच के ही लोगों को जहर परोसा जा रहा है?'कागजों में साफ-

सुथरा, हकीकत में सड़ा खाना?' यह घटना एक बार फिर साबित करती है कि निरीक्षण सिर्फ कागजों तक सीमित है जमीनी हकीकत में दुकानों में गुणवत्ता की कोई गारंटी नहीं अगर एक नामी दुकान में यह हाल है, तो छोटे ठेलों और दुकानों की स्थिति का अंदाजा खुद लगाया जा सकता है।सीधे सवाल-जवाब कौन देगा? क्या प्रशासन इस वीडियो को गंभीरता से लेगा?क्या दुकान पर सख्त कार्रवाई होगी या मामला ठंडे बस्ते में जाएगा?और सबसे बड़ा सवाल-क्या लोगों की थाली में जहर परोसने वालों पर लगाम लगेगी या नहीं? फिलहाल वीडियो ने पूरे मैहर में हड़कंप मचा दिया है, लेकिन असली परीक्षा अब प्रशासन की है-कार्रवाई होगी या सिर्फ जांच का ढोंग? ज्ञात हो कि मैहर में शारदीय चैत्र नवरात्रि मेले का आयोजन हो रहा है जिसमें देश के कोने-कोने से लाखों की संख्या में श्रद्धालु मैहर पहुंच रहे हैं और सबसे बड़ी बात की यह बीकानेर एक्सप्रेस रेलवे स्टेशन के समीप की स्थिति जहां पर प्रतिदिन हजारों की संख्या में दर्शनार्थी मैहर पहुंचते हैं ऐसे मे एक गंभीर सवाल सेहत को लेकर खडा होता है।

मुख्य सचिव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से अधिकारियों को दिए निर्देश,त्यौहारों के दौरान कानून और व्यवस्था की कड़ी निगरानी करें - मुख्य सचिव
मनरेगा योजना से जल संरक्षण के कार्य प्राथमिकता से कराए - मुख्य सचिव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) शहडोल। मुख्य सचिव श्री अनुराग

जैन ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से अधिकारियों को निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कहा कि कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक त्यौहारों के दौरान कानून और व्यवस्था की कड़ी निगरानी करें। सभी एसपी जोनल प्लान तैयार करके 31 मार्च तक प्रस्तुत कर दें। नशीले पदार्थों के विरूद्ध अभियान चलाने के साथ-साथ जन जागरूकता अभियान चलाएं। एनकोर समिति की हर महीने बैठक करके कार्यवाही विवरण पोर्टल पर दर्ज कराएं। सीएम हेल्पलाइन में सौ दिन से अधिक समय से लंबित प्रकरणों का समय सीमा में निराकरण कराएं। अविवादित नामांतरण तथा बटवारा के प्रकरण समय सीमा में निराकृत करें। सभी जिले निर्धारित लक्ष्य के अनुसार राजस्व का संग्रहण कराएं। सागर, इंदौर, भोपाल और जबलपुर जिले इस पर विशेष ध्यान दें। स्वामित्व योजना में शेष लंबित प्रकरणों का निराकरण एक माह में कराएं। इस योजना में मध्यप्रदेश देश में सबसे आगे है।मुख्य सचिव ने कहा कि मनरेगा योजना से जल संरक्षण और संवर्धन के कार्य प्राथमिकता से कराएं। इसे जल गंगा अभियान में शामिल करके पोर्टल पर प्रगति दर्ज करें। मनरेगा से दो लाख 51 हजार कार्य स्वीकृत हैं। इनमें जल संरक्षण के कार्यों को प्राथमिकता देने से जल गंगा संवर्धन अभियान अधिक प्रभावी बनेगा। एकल नलजल योजनाओं का निर्माण कार्य 31 मार्च तक पूरा कराकर इन्हें ग्राम पंचायतों को समारोहपूर्वक हैण्डओवर करें। साथ ही सभी घरों में नल कनेक्शन और पानी की आपूर्ति भी सुनिश्चित कराएं। एकल नलजल योजनाओं के स्रोत तथा हैण्डपंपों में रिचार्ज पिट बनाएं। बैठक में मुख्य सचिव ने अधिकारियों को प्राकृतिक खेती, खाद के ई टोकन से शत-प्रतिशत वितरण, पेट्रोल-डीजल और एलपीजी की आपूर्ति पर निगरानी के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने कहा कि पेट्रोल और डीजल की प्रदेश में पर्याप्त उपलब्धता है। इस संबंध में आमजनों को लगातार जानकारी दें। बैठक में अधिकारियों को गेंहू उपार्जन की तैयारी, स्वरोजगार योजनाओं की लक्ष्यपूर्ति, नरवाई प्रबंधन, अग्नि दुर्घटना से बचाव के उपाय, राहवीर योजना तथा प्रधानमंत्री दुर्घटना राहत योजना के संबंध में निर्देश दिए गए। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर कार्यालय से कमिश्नर श्रीमती सुरभि गुप्ता, कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से कलेक्टर डॉ. केदार सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री रामजी श्रीवास्तव, सीईओ जिला पंचायत श्री शिवम प्रजापति सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

श्री अभयदाता जी भगवान का अद्भुत विग्रहःकथा वाचक राजन महराज,अद्भुत विग्रह के दर्शन कर भावविभोर हुए
प्रख्यात कथावाचक राजन जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। शहर स्थित हनुमान जी के विग्रह को निहारते हुए गहरे आध्यात्मिक भाव में डूब के पुजारी ओम प्रकाश मिश्र ने राजन जी महाराज का विधिवत

भवानी पेपर मिल स्थित प्रसिद्ध श्री अभयदाता जी मंदिर में गुरुवार को अपरान्ह अनूठा आध्यात्मिक वातावरण दिखा, गए और उनके चेहरे पर भक्ति का अद्भुत तेज झलक उठा। रायबरेली आगमन के उपरांत उन्होंने विशेष रूप से मंदिर सम्मान किया। उन्होंने महाराज को माला पहनाकर श्री अभयदाता जी की चरण पादुका उनके सिर पर रखकर आशीर्वाद ग्रहण

व्यासपीठ से अभयदाता भगवान का किया स्मरण, मंदिर में भक्ति और श्रद्धा का दिव्य वातावरण

जब प्रख्यात कथावाचक राजन जी महाराज मंदिर पहुंचकर श्री अभयदाता भगवान के दर्शन किए। मंदिर में विराजमान श्री अभयदाता जी के दिव्य एवं अलौकिक विग्रह को देखकर वे भावविभोर हो उठे। राजन महाराज ने कहा कि भगवान का ऐसा अद्भुत विग्रह उन्होंने पहली बार देखा है। दर्शन के दौरान राजन जी महाराज पहुंचकर श्री अभयदाता जी के चरणों में शीश नवाया और आशीर्वाद प्राप्त किया। अगले दिन शुक्रवार को रामकथा के दौरान व्यासपीठ से भी उन्होंने श्री अभयदाता जी का स्मरण करते हुए श्रद्धालुओं को भगवान की महिमा का रसपान कराया। उनके उद्गारों ने श्रोताओं को भक्ति और आस्था की धारा में सराबोर कर दिया। इस अवसर पर मंदिर कराया। साथ ही, उन्हें भगवान की अद्भुत छवि भेंट कर सम्मानित किया। मंदिर परिसर में इस दौरान भक्तों की भारी उपस्थिति रही और पूरा वातावरण 'जय श्रीराम' एवं 'हनुमान जी महाराज की जय' के जयघोष से गूंज उठा। यह आयोजन श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुपम उत्सव के वातावरण में बदल गया।

डॉक्टरों ने किया था मृत घोषित, चिता पर जिंदा मिला युवक,सांसें चलती देख परिजनों के होश उड़ गए

भदोही। भदोही से एक ऐसी घटना सामने आई है, जिसने न

सिर्फ इलाके बल्कि पूरे जनपद को झकझोर कर रख दिया है। यहां डॉक्टरों द्वारा मृत घोषित किया गया एक व्यक्ति चिता पर जिंदा मिल गया। अंतिम संस्कार से ठीक पहले उसकी सांसें चलती देख परिजनों के होश उड़ गए और घाट पर अफरातफरी मच

गई। घटना औराई कोतवाली क्षेत्र के खेतलपुर के पास 23 मार्च की है। सायर गांव निवासी 40 वर्षीय अनिल वनवासी सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें तत्काल जिला अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन हालत नाजुक देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें वाराणसी रेफर कर दिया। परिजन अनिल को वाराणसी के लंका स्थित एक निजी अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान मंगलवार शाम डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया।रोते-बिलखते परिजन शव को लेकर गंगा घाट पहुंचे और अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू कर दी। घाट पर चिता सजाई जा रही थी, लकड़ियां लग चुकी थीं और अंतिम विदाई का माहौल था। तभी अचानक एक ऐसा दृश्य सामने आया, जिसने सबको स्तब्ध कर दिया-अनिल के हाथ की उंगली में हल्की हरकत हुई। पहले इसे किसी का भ्रम समझा गया, लेकिन जब ध्यान से देखा गया तो उनके सीने में हलचल महसूस हुई। सांसें चलती देख वहां मौजूद लोग दंग रह गए। मातम का माहौल अचानक हड़कंप में बदल गया। परिजनों ने बिना एक पल गंवाए अनिल को चिता से उठाया और सीधे औराई ट्रामा सेंटर लेकर दौड़े।डॉक्टरों ने जांच के बाद बताया कि अनिल जिंदा हैं और गंभीर चोट के चलते गहरी बेहोशी में चले गए थे। फिलहाल उनका इलाज जारी है और हालत पर लगातार नजर रखी जा रही है। घटना के बाद परिजनों में भारी आक्रोश है। अनिल की पत्नी मालती ने वाराणसी के निजी अस्पताल पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि बिना पूरी जांच किए ही उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। वहीं, पीड़ित की बहन कमला वनवासी का कहना है कि अगर समय रहते हरकत न दिखती, तो उनका भाई जिंदा ही जला दिया जाता।गांव के प्रधान राजीव जायसवाल ने भी इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है। एक तरफ यह घटना चिकित्सा व्यवस्था की संभावित लापरवाही को उजागर करती है, तो दूसरी तरफ जीवन और मृत्यु के बीच की उस पतली रेखा को भी दिखाती है, जहां एक पल की चूक सब कुछ बदल सकती है। फिलहाल अनिल जिंदगी की जंग लड़ रहे हैं और पूरा गांव उनके स्वस्थ होने की दुआ कर रहा है।

जिला जज व डीएम-एसपी ने जिला कारागार का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला जज अमित पाल

सिंह, जिलाधिकारी हर्षिता माथुर व पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने जिला कारागार रायबरेली का

निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा कैदियों की समस्याओं को सुना। सभी बैरकों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कारागार के पाकशाला में बन्दियों को दिये जाने वाले भोजन की गुणवत्ता, साफ सफाई,पेयजल,प्रकाश व्यवस्था आदि का भी अवलोकन किया गया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुवे कहा कि व्यवस्थाओं को नियमानुसार दुरूस्त रखने के साथ ही बंदी गृह में रह रहे मरीजों की चिकित्सा व्यवस्था का भी ध्यान रखा जाए। उन्होंने निर्देश दिये कि सभी व्यवस्थाओं को जेल मैनुअल के अनुरूप ही सुनिश्चित कराया जाए। इस अवसर पर सी0जी0एम0 पवन कुमार सिंह, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अमोद कंठ, जेल अधीक्षक प्रभात सिंह, जेलर हिमांशु रौतेला सहित संबंधित कार्मिकगण उपस्थित रहें।

चोपन में फुटबॉल मैदान में मुख्यमंत्री सामुहिक विवाह में 324 जोड़ों का हुआ विवाह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। समाज कल्याण विभाग

द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनान्तर्गत जिला प्रशासन सोनभद्र के कुशल पर्यवेक्षण में दिनांक 26.03.2026 को रेलवे फुटबाल मैदान चोपन, सोनभद्र में 322 हिन्दु एवं 02 मुस्लिम जोड़ों सहित कुल 324 जोड़ों का सामूहिक विवाह उनके रिति-रिवाज के अनुसार भव्य रूप से सम्पन्न कराया गया। उक्त आयोजन में विकास खण्ड चोपन से 77, कोन से 65, दुद्धी से 68, म्योरपुर से 59 एवं बभनी से 55 पात्र जोड़े सम्मिलित हुये। उक्त आयोजन में मा0 राज्य मंत्री समाज कल्याण श्री संजीव गोड़, मा0 उपाध्यक्ष अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग श्री जीत सिंह खरवार, मा0 जिला पंचायत सदस्य श्री मोहन कुशवाहा, ब्लाक प्रमुख चोपन, इत्यादि जनप्रतिनिधिगणों के साथ-साथ जिलाधिकारी महोदय, मुख्य विकास अधिकारी महोदया, अपरजिलाधिकारी (नमामि गंगे), जिला विकास अधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी चोपन, कोन, दुद्धी, म्योरपुर एवं बभनी, जिला समाज कल्याण अधिकारी एवं अन्य अधिकारीगणों ने उपस्थित वर-वधू का कन्यादान करते हुए उन्हे अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उक्त कार्यक्रम में समाज कल्याण विभाग, विकास विभाग एवं पुलिस प्रशासन के कर्मचारियों द्वारा अपेक्षित सहयोग प्रदान करते हुए कार्यकम का सफल आयोजन कराया गया। शासनादेश के अनुसार मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह में सम्मिलित होने वाले प्रति युगल हेतु रू0 1,00,000/- (रू0 एक लाख मात्र) का व्यय भार निर्धारित है। जिसमें कन्या के दाम्पत्य जीवन खुशहाली एवं गृहस्थी की स्थापना हेतु सहायता राशि रू0 60,000/- (रू0 साठ हजार मात्र) कन्या के खाते में डी0बी0टी के माध्यम से अन्तरित की जायेगी एवं धनराशि रू0 25,000/- (रू0 पच्चीस हजार मात्र) का वैवाहिक उपहार सामग्री यथा-पालय-बिछिया, गद्दा, तकिया, साड़ी, ब्लाउज, पेटिकोट, चुनरी, लहंगा, चादर, प्रेस, डिनर सेट, सिलिंग फैन, मिष्ठान इत्यादि तथा कन्या को कलाई घड़ी प्रदान की गयी। बिरला कार्बन रेनुकूट द्वारा वैवाहिक जोड़ो को उपहार सामग्री प्रदान की गयी। कार्यक्रम आयोजन हेतु भोजन, पण्डाल, फर्नीचर, पेयजल, विद्युत/प्रकाश एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु रू0 15,000/- (रू0 पन्द्रह हजार मात्र) प्रति जोड़ा व्यय किया गया। उक्त आयोजन में सामूहिक विवाह सेल्फी प्वाइंट एवं नशा मुक्त भारत अभियान के तहत सेल्फी प्वाइंट बनाया जाने के साथ-साथ उपस्थित जनमानस के बीच समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बैनर पम्पलेट, स्टैण्डी, पोस्टर आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार भी किया गया, जिससे कि ज्यादा से ज्यादा लोग समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं से लाभान्वित हो सके। (ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया) जिला समाज कल्याण अधिकारी, सोनभद्र। कार्यालय-जिला समाज कल्याण अधिकारी, सोनभद्र।

सोनभद्र के मुठेर ग्राम में आस्था का सैलाब, 22 वर्षों से जीवंत है माता जी के प्राकट्य की पावन गाथा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रॉबर्ट्सगंज/सोनभद्र। जनपद सोनभद्र की पावन धरा आध्यात्मिकता और लोक-आस्था

का अद्भुत संगम है। जिला मुख्यालय रॉबर्ट्सगंज से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मुठेर ग्राम आज एक ऐसा दिव्य केंद्र बन चुका है, जहाँ श्रद्धालुओं का अटूट विश्वास और माता जी की असीम अनुकंपा साक्षात महसूस की जाती है। वह ऐतिहासिक दिनः 27 सितंबर 2004 मुठेर ग्राम के इतिहास में साल 2004 का वह दिन स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है। 27 सितंबर 2004, अश्विन मास, कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि और सोमवार का वह पावन दिन था, जब इस गाँव की पवित्र माटी पर माता जी का प्राकट्य (आगमन) हुआ। ग्रामीणों के अनुसार, उस समय का वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो गया था और तब से आज तक माँ की कृपा का यह सिलसिला अनवरत जारी है। पुजारी जी की जुबानीः श्रद्धा और विश्वास का सफर-मंदिर के मुख्य पुजारी जी से हुई विशेष बातचीत में उन्होंने उस ऐतिहासिक घटना के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया कि माता जी के यहाँ आगमन का मुख्य उद्देश्य भक्तों का कल्याण और क्षेत्र में सुख-शांति स्थापित करना था। पुजारी जी के अनुसार, पिछले दो दशकों में यह स्थान न केवल स्थानीय बल्कि दूर-दराज के जनपदों के श्रद्धालुओं के लिए भी बड़ी आस्था का केंद्र बन गया है। मान्यताएं और चमत्कार-श्रद्धालुओं का दृढ़ विश्वास है कि मुठेर धाम की चौखट पर जो भी सच्चे मन से मत्था टेकता है, माता जी उसकी झोली कभी खाली नहीं रहने देतीं। संतान प्राप्ति, रोगों से मुक्ति और मानसिक शांति के लिए यहाँ विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं। हर साल अश्विन कृष्ण पक्ष नवमी को यहाँ भव्य वार्षिकोत्सव का आयोजन होता है, जिसमें हजारों की संख्या में भक्त शामिल होते हैं। 'मुठेर ग्राम की यह भूमि अब केवल एक स्थान नहीं, बल्कि लाखों लोगों की उम्मीदों का केंद्र है। 2004 से शुरू हुई यह आध्यात्मिक यात्रा आज एक वटवृक्ष का रूप ले चुकी है।मुख्य पुजारी, मुठेर धाम।

रामनवमी पर शिक्षा व्यवस्था को नई सौगात,डायट परिसर में नव निर्मित बीएसए कार्यालय का डीएम व सीडीओ ने किया उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)सोनभद्र। रामनवमी के शुभ अवसर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) परिसर में नव निर्मित जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) कार्यालय का उद्घाटन जिलाधिकारी श्री बद्रीनाथ नाथ सिंह एवं मुख्य विकास संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी नए शैक्षिक सत्र से कार्यालय का संचालन व्यवस्थित, पारदर्शी एवं प्रभावी ढंग से सुनिश्चित किया जाए, जिससे शिक्षा संबंधी कार्यों में और अधिक गति एवं गुणवत्ता लाई जा सके। कार्यक्रम के दौरान जिला विकास अधिकारी

अधिकारी श्रीमती जागृति अवस्थी द्वारा विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर किया गया। उद्घाटन के पश्चात दोनों अधिकारियों द्वारा कार्यालय में औपचारिक प्रवेश भी किया गया। जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय के सभी कक्षों का गहनता से निरीक्षण किया गया तथा निर्माण कार्य में शेष रह गए अधूरे कार्यों को तत्काल पूर्ण कराने हेतु कार्यदाई संस्था को निर्देशित किया गया। उन्होंने श्री हेमन्त सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री मुकुल आनंद पाण्डेय, जिला पंचायत राज अधिकारी श्रीमती नमिता शरण, जिला परियोजना अधिकारी श्री विनीत सिंह सहित जनपद के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। इसके साथ ही जनपद के सभी विकास खंडों के खण्ड शिक्षा अधिकारी, डी.सी. शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं कार्यालय स्टाफ भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

प्रकाश जीनियस पब्लिक इंग्लिश स्कूल में रामनवमी का पर्व मनाया गया

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रकाश

जीनियस पब्लिक इंग्लिश स्कूल की नई शाखा प्रकाश जीनियस किड्स स्कूल टैगोर नगर रावटसगंज में शुक्रवार को रामनवमी का पर्व बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत भगवान श्री राम की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पूजा - अर्चना के साथ हुई। विद्यार्थियों ने भगवान श्री राम के जीवन पर आधारित नाटक मंचन किया, जिसमें उनके आदर्शों और मर्यादा का सुंदर चित्रण किया गया। विद्यालय के प्रबंधक राजेंद्र प्रसाद जैन ने अपने संबोधन में रामनवमी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को भगवान श्री राम के आदर्श सत्य धर्म और कर्तव्य को जीवन में अपने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि ऐसे पर्व हमें हमारी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ते हैं। इस अवसर पर विद्यालय की शिक्षिकाएं साधना पांडे, पूनम, श्रद्धा मिश्रा, आकांक्षा मोदनवाल उपस्थित रहे।

3 किलो गांजा के साथ गिरफ्तार,फर्जी नंबर प्लेट लगी बाइक भी बरामद

सोनभद्र। पुलिस ने गुरूवार की देर रात्रि गश्त और सघन वाहन चेकिंग के दौरान एक हिस्ट्रीशीटर अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। उसके पास से 3 किलो 110 ग्राम अवैध गांजा और फर्जी नंबर प्लेट लगी एक मोटरसाइकिल बरामद की गई है। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देश पर, अपराध एवं मादक पदार्थ विरोधी अभियान के तहत कोन पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि चौमास पहाड़ी के पास एक अभियुक्त बाइक के साथ खड़ा है इस सूचना पर पुलिस ने बागेसोती गांव से अभियुक्त को पकड़ा लिया। गिरफ्तार अभियुक्त की पहचान नूर मुहम्मद (28) पुत्र जलील अहमद, निवासी गिधिया, थाना कोन, जनपद सोनभद्र के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान उसके कब्जे से एक बोरी में तीन बंडलों में रखा गांजा, एक कीपैड मोबाइल फोन और 200 रुपये नकद भी मिले। बरामद मोटरसाइकिल पर फर्जी नंबर प्लेट CG16AH1415 लगी थी, जबकि उसका वास्तविक नंबर UP64AZ6401 है। नूर मुहम्मद थाना कोन का हिस्ट्रीशीटर है और उसके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

'तो धोनी रिटायर हो जाते', रविचंद्रन अश्विन ने संजू सैमसन की चर्चा पर दिया ऐसा बड़ा बयान

नयी दिल्ली। आईपीएल 2026 की शुरुआत 28 मार्च से होने वाली है। यह संभवतः दिग्गज एमएस धोनी का आखिरी आईपीएल सीजन लग रहा है। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन के आने के बाद एमएसडी कहां बल्लेबाजी करेंगे यह बड़ा सवाल है। क्या उनको प्लेइंग 11 में जगह मिलेगी? क्या वो इम्पैक्ट प्लेयर की तरह खेलेंगे? इस तरह के सवाल उनको लेकर चल रहे हैं।एमएस धोनी ने पिछले सीजन 7वें या 8वें नंबर पर आकर बल्लेबाजी की थी। उन्होंने खुद से ऊपर दूसरों को प्रमोट किया था। धोनी को लेकर हाल ही में साउथ अफ्रीका के दिग्गज एबी डिविलियर्स ने बड़ा बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि एमएस धोनी चेन्नई सुपर किंग्स के 'टॉप 6 बल्लेबाजों' में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि धोनी को या तो ऊपर बल्लेबाजी करनी चाहिए या उन्हें बिल्कुल भी नहीं खेलना चाहिए। अब इस मामले पर चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व खिलाड़ी रविचंद्रन अश्विन ने भी बड़ा बयान दिया है। भारतीय टीम और चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व गेंदबाज रविचंद्रन अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, 'मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि वह इम्पैक्ट लिस्ट पर रहें। अगर वह स्क्वाड में हैं तो उन्हें खेलना ही होगा। अगर वो खेलना नहीं चाहते तो उन्हें पूरा सीजन नहीं खेलना चाहिए। बस इतना ही है। मैं उनके इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर खेलने से सहमत नहीं हूं।'उन्होंने आगे कहा, 'अगर आप सीएसके की प्लेइंग 11 बना रहे हैं और धोनी स्क्वाड में है तो डिबेट वहीं खत्म हो जाती है। उन्हें प्लेइंग 11 में होना होगा। अगर वो खेलना नहीं चाहते तो वो रिटायर हो जाते। उनको 100 परसेंट भरोसा है कि वो खेल सकते हैं। वो पिछले तीन महीने से प्रैक्टिस कर रहे हैं। वो मैसेज दे रहे हैं कि उन्हें खेलना है। अगर वो खेलना चाहते हैं तो यह पॉसिबल नहीं है कि आप उनको जाकर कहें कि वो नहीं खेल सकते है।'

पिच पर आया कुत्ता तो अभिषेक पोरेल ने किया कुछ ऐसा, वायरल हुआ दिल्ली कैपिटल्स का यह वीडियो

नयी दिल्ली। आईपीएल 2026 के आगाज से पहले दिल्ली कैपिटल्स के खेमे से एक ऐसा वीडियो सामने आया है जिसने सोशल मीडिया पर फैंस का दिल जीत लिया है। टीम के विस्फोटक बाएं हाथ के बल्लेबाज अभिषेक पोरेल अपनी दरियादिली की वजह से चर्चा में हैं। दरअसल दिल्ली कैपिटल्स की टीम प्रैक्टिस कर रही थी। इस दौरान एक कुत्ता मैदान में आ गया, लेकिन इस कुत्ते को भगाने के बजाए, अभिषेक ने कुछ ऐसा किया जिसके बाद फैंस उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं। मैदान पर नन्हा मेहमान और पोरेल ने किया ये काम- दिल्ली कैपिटल्स के एक प्रैक्टिस सेशन के दौरान जब अभिषेक पोरेल बल्लेबाजी कर रहे थे, अचानक एक कुत्ता पिच पर आ गया। खेल रुक गया, लेकिन पोरेल ने चिढ़ने के बजाय उस बेजुबान को बड़े प्यार से अपनी गोद में उठाया और सुरक्षित स्थान पर छोड़ आए। पोरेल के इस व्यवहार को देखकर वहां मौजूद साथी खिलाड़ी और कोचिंग स्टाफ भी मुस्कुराने लगे। यह वीडियो अब इंटरनेट पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसे फैंस काफी ज्यादा पसंद कर रहे हैं। दिल्ली कैपिटल्स ने इस वीडियो अपने सोशल मीडिया पर शेयर किया है। अपने पहले खिताब की तलाश में दिल्ली कैपिटल्स ने 2026 की मेगा नीलामी में जमकर पैसा बहाया है। टीम में में खई दमदार खिलाड़ी मौजूद हैं। दिल्ली के पास केएल राहुल, अभिषेक पोरेल, पृथ्वी शॉ, पथुम निसांका और बेन डकेट जैसे कई सलामी बल्लेबाज हैं। ऐसे में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ पहले मैच में ओपनिंग जोड़ी क्या होगी, यह देखना दिलचस्प होगा। दूसरी ओर गेंदबाजी में स्टार्क, कुलदीप यादव और लुंगी एनगिडी की मौजूदगी दिल्ली को इस बार खिताबी दावेदार बना रही है। केएल राहुल (विकेटकीपर), अभिषेक पोरेल, नीतीश राणा, डेविड मिलर, अक्षर पटेल (कप्तान), ट्रिस्टन स्टब्स, आशुतोष शर्मा, आकिब नबी, मिचेल स्टार्क, कुलदीप यादव, लुंगी एनगिडी।

हम जल्द ही मम्मी-पापा बनने वाले हैंःखुशी तो है, लेकिन थोड़ा डर भी है, अच्छा पेरेंट बनने के लिए सबसे जरूरी क्या है?

जयपुर। विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं अहमदाबाद से हूं। मेरी शादी को 3 साल हो गए हैं। जल्द ही हम पेरेंट बनने वाले हैं। जाहिर है, इस कारण हमारी एंग्जाइटी भी थोड़ी बढ़ी हुई है। हम पेरेंटिंग पर तमाम किताबें पढ़ रहे हैं, पॉडकास्ट सुन रहे हैं। हालांकि ये सब पढ़ना-सुनना और कनफ्यूज कर रहा है। क्या आप हमें कुछ बेसिक टिप्स दे सकते हैं कि हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। जवाब- सबसे पहले आप दोनों को इस नई यात्रा के लिए बहुत बधाई। पढ़कर खुशी हुई कि आप इस नई जिम्मेदारी से पहले खुद को तैयार कर रहे हैं। अवेयरनेस ही अच्छी पेरेंटिंग की पहली सीढ़ी है। सबसे पहले तो ये समझिए कि जब बच्चा दुनिया में आता है तो उसे सुख-सुविधाओं वाले पेरेंट्स से ज्यादा हैप्पी पेरेंट्स की जरूरत होती है। माता-पिता का खुश रहना ही बच्चे के लिए सबसे खूबसूरत तोहफा है। वियतनामी बौद्ध भिक्षु और मशहूर राइटर तिक न्यात हन्ह ने अपनी किताब 'फिडिलिटीः हाउ टू क्रिएट लविंग रिलेशनशिप दैट लास्ट्स' में इस बारे में लिखा है-किताबें पढ़ना और पॉडकास्ट सुनना अच्छी बात है, क्योंकि ये हमें दिशा देते हैं। लेकिन यह समझना जरूरी है कि पेरेंटिंग की असली नींव किसी ट्रेंड या तकनीक पर नहीं, बल्कि घर के माहौल पर टिकी होती है। बच्चा सबसे पहले अपने आसपास वेक वातावरण से ही सीखता है। अच्छी पेरेंटिंग कोई हेलीकॉप्टर पेरेंटिंग करना या सुपर मॉम-डैड होना नहीं है। पेरेंट होने की जो एकदम बेसिक जिम्मेदारी है, वो है बच्चे को अनकंडीशनल प्यार और सिक्योरिटी देना।अक्सर हम बच्चे के आने की तैयारी कपड़ों, खिलौनों और कमरे की सजावट से करते हैं। लेकिन भावनात्मक तैयारी को नजरअंदाज कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि पेरेंटिंग की असली शुरुआत बच्चे के जन्म से पहले हमारी सोच, हमारे रिश्ते और हमारे धैर्य से हो जाती है। ऐसे में नए पेरेंट्स के लिए जरूरी है कि वे खुद को मानसिक रूप से तैयार करें। यह समझें कि पेरेंटिंग कोई परफॉर्मेंस नहीं है, बल्कि यह सीखने की निरंतर प्रक्रिया है। आप जितने मजबूत और संतुलित होंगे, बच्चे को उतना ही सुरक्षित और खुशहाल माहौल दे पाएंगे। इस तैयारी को आसान बनाने के लिए यह छोटी-सी चेकलिस्ट मददगार हो सकती है-इमोशनली तैयार रहें पेरेंटिंग सिर्फ फिजिकल नहीं, इमोशनल जिम्मेदारी भी है। बच्चे के आने के बाद आपकी नींद, रूटीन और प्राथमिकताएं बदलती हैं। अगर आप मानसिक रूप से तैयार रहेंगे तो बदलाव को स्वीकार करना आसान होगा और बच्चे को ज्यादा स्थिर माहौल दे पाएंगे। अपने रिश्ते में मधुरता रखें-बच्चे बड़े होते हुए पेरेंट्स के रिश्ते को देखते और महसूस करते हैं। अगर घर में आपसी सम्मान और प्यार है तो वही उनके व्यवहार में भी झलकता है। पार्टनर के साथ स्वस्थ और संतुलित रिश्ता बनाए रखना पेरेंटिंग का अहम हिस्सा है। सुनने की आदत डालें-अक्सर पेरेंट्स बच्चों को समझाने पर ज्यादा ध्यान देते से सुनने की आदत डालें। धैर्य का अभ्यास करें-बच्चे तुरंत नहीं सीखते, वे धीरे-धीरे समझते हैं। एक ही गलती बार-बार दोहराते हैं। ऐसे में गुस्सा करने की बजाय धैर्य रखना जरूरी है। आपका

शांत-सरल व्यवहार ही बच्चे को सही मार्गदर्शन देता है। गलतियां स्वीकारना सीखें-कोई भी पेरेंट परफेक्ट नहीं होता। अगर गलती हो जाए तो उसे स्वीकार करें। इससे बच्चा भी अपनी गलतियों को स्वीकारना सीखता है और समय निकालें-क्वालिटी टाइम बच्चे की इमोशनल ग्रोथ के लिए बहुत जरूरी है। दिन में कुछ समय निकालकर बच्चे के साथ जरूर बताएं। यही क्वालिटी टाइम माता-पिता और बच्चे की बॉन्डिंग को मजबूत बनाता है। स्क्रीन टाइम कम करें-ज्यादा स्क्रीन टाइम न सिर्फ बच्चों, बल्कि पेरेंट्स के व्यवहार को भी प्रभावित करता है। अगर आप खुद स्क्रीन में व्यस्त रहेंगे तो बच्चे के साथ कनेक्शन कम होगा। इसलिए टेक्नोलॉजी का संतुलित उपयोग करें। जरूरत पर काउंसलर की मदद लें-अगर कभी लगे कि आप स्थिति को संभाल नहीं पा रहे हैं तो काउंसलर की मदद लेने में न हिचकिचाएं। समय पर सही मार्गदर्शन लेना ही समझदारी है। बच्चे के लिए 'सेफ स्पेस' बनें-पेरेंटिंग सिर्फ जरूरतें पूरी करने तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चे को भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस कराना सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। जब आप बच्चे को अनकंडीशनल लव देते हैं तो बच्चा सेफ महसूस करता है। बच्चे को ऐसा महसूस होना चाहिए कि-वह हमेशा सुरक्षित है। वह अपनी गलतियों या भावनाओं को बिना डर के आपके साथ शेयर कर सकता है। आपका प्यार किसी शर्त, परफॉर्मेंस या व्यवहार पर निर्भर नहीं है। उसे किसी और जैसा बनने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है। वह जो कहता है, उसे ध्यान से सुना और समझा जाता है। उसके डर, गुस्से या दुख को नकारा नहीं जाता, बल्कि समझा जाता है। मम्मी-पापा हर हाल में उसके साथ खड़े हैं।बच्चे के जन्म के बाद जिंदगी पूरी तरह बदल जाती है। नई जिम्मेदारियां, नई चिंताएं और कई बार अनजाने डर भी पेरेंट्स के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ऐसे में अनजाने में कई गलतियां हो जाती हैं, जिनका असर बच्चे की पर्सनैलिटी और इमोशनल ग्रोथ पर पड़ सकता है। याद रखें, बच्चा पेरेंट्स के माध्यम से दुनिया को समझता है। इसलिए जरूरी है कि हम उसे सहज प्यार दें। अंत में यही कहूंगी कि पेरेंटिंग की बुनियाद किसी तकनीक या ट्रेंड में नहीं, बल्कि आपके घर के माहौल पर निर्भर है। इस जर्नी में जिद, गुस्सा और तनाव जैसे कई चैलेंजेस आएंगे। याद रखें, ये यात्रा आसान नहीं होगी। इसमें ढेरों सैक्रीफाइस होंगे, लेकिन इसमें खुशी और संतोष भी उतना ही होगा। पेरेंटिंग एक यात्रा है, प्रोजेक्ट नहीं। इसमें सीखना, गिरना, संभलना और फिर आगे बढ़ना सबकुछ शामिल है।

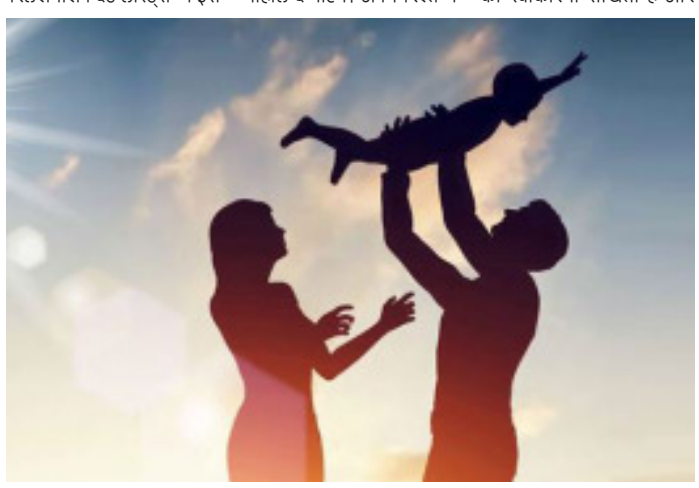

पार्टनर शादी की बात टाल देता है, मुझे तो शादी चाहिए, क्या मैं ब्रेकअप कर लूं

नयी दिल्ली। विषय पर बात को समझते हैं एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा द्वारा सवाल जवाब के माध्यम से। सवालः मेरी उम्र 29 साल है और मैं दिल्ली में रहती हूं। मैं और मेरा बॉयफ्रेंड पिछले 5 सालों से रिलेशनशिप में हैं। मैं पहले जिस कंपनी में काम करती थी, वहीं हमारी मुलाकात हुई थी। फिर जॉब चेंज होने के बाद भी हमारा रिलेशनशिप कंटीन्यू रहा। मैं शुरू से ही ये बात कहती थी कि मुझे शादी करनी है। मुझे फैमिली और बच्चे चाहिए। इन 5 सालों में उसने कभी इस बात का विरोध नहीं किया। उल्टे वो भी कहता था कि उसे भी शादी करनी है। मुझे लगता था कि इस रिश्ते का अंत एक सुंदर शादी और परिवार में होगा। शुरू के तीन साल तो सिर्फ रोमांस और करियर की दौड़ में निकल गए। पिछले दो सालों से मैंने शादी के बारे में पूछना शुरू किया। पहले तो वो कहता था कि हां देखेंगे, करेंगे, जल्दी क्या है। लेकिन अब पिछले एक साल से मैं नोटिस कर रही हूं कि वो शादी की बात बिल्कुल इंटरटेन ही नहीं करता। तुरंत टॉपिंग बदल देता है, बात को टाल देता है, कुछ और करने लगता है। वो हां भी नहीं करता और ना भी नहीं करता। कहीं उसे कमिटमेंट फोबिया तो नहीं। मैं कैसे बात करूं? क्या मुझे वेट करना चाहिए या अपने भविष्य की बात पर टालमटोल करता है, तो मन में डर और शक आना स्वाभाविक है। क्या वो सच में कमिटमेंट से डर रहा है, या बस समय का बहाने बना रहा है? आप जो महसूस कर रही हैं, वो हजारों लड़कियों की कहानी है। आइए इस समस्या को एक-एक करके समझते हैं। हम चुनौतियों की बात करेंगे, उनके पीछे के कारण देखेंगे और फिर कुछ आसान तरीके जानेंगे जिनसे आप फैसला ले सकती हैं। साथ ही, हम यह भी देखेंगे कि पुरुष और महिलाएं इस स्थिति में अलग-अलग कैसे सोचते हैं और आपके पार्टनर को क्या सलाह देनी चाहिए। याद रखें, रिश्ते में भरोसा और बातचीत से बहुत कुछ सुलझ जाता है। जब रिश्ता लंबा चलता है लेकिन शादी की बात पर रुक जाता है, तो कई परेशानियां सामने आती हैं। ये वो मुश्किलें हैं जो आपके मन को परेशान करती हैं और रिश्ते पर असर डालती हैं। कल्पना करें कि आप अपने बॉयफ्रेंड के साथ एक अच्छा डिनर कर रही हैं और आप शादी का जिक्र करती हैं। वो मुस्कुराकर कहता है, अभी नहीं, बाद में सोचेंगे। लेकिन आपके मन में सवाल उठता है। क्या वो मुझे सिर्फ टाइम पास समझता है? 5 साल के रिश्ते में यह असुरक्षा आपकी रातों की नींद हराम कर कमजोर करता है और आप सोचती रहती हैं कि क्या इंतजार करके अपना समय बर्बाद कर रही हूं?यह स्थिति छोटी-छोटी बातों पर बहस में बदल जाती है। आपका मूड खराब रहता है और वो सोचता है कि आप ज्यादा डिमांडिंग हो गई हैं। इससे रिश्ते में इमोशनल कनेक्शन कम हो जाता है। कई पुरुषों को शादी का मतलब जिम्मेदारियां लगता है, घर, बच्चे, फैमिली। वे सोचते हैं कि अभी फ्रीडम एंजॉय कर लें। महिलाएं अक्सर रिश्ते को जल्दी कमिटमेंट में बदलना चाहती हैं क्योंकि वे भावनात्मक सुरक्षा ढूंढती हैं।दिल्ली के बारे में सख्त फैसला लेना चाहिए?जवाबः सबसे पहले तो आपकी बात सुनकर लगता है कि आप एक मजबूत और समझदार इंसान हैं। 5 साल का रिश्ता चलाना कोई छोटी बात नहीं है, खासकर दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में जहां जिंदगी की भागदौड़ में रिश्ते बनाना और निभाना दोनों मुश्किल होते हैं। आपकी उम्र 29 साल है, और आप शादी और परिवार की सोच सकती है।29 साल की उम्र में महिलाएं अक्सर बायोलॉजिकल क्लॉक के बारे में सोचती हैं। फैमिली और दोस्त पूछते हैं, शादी कब कर रही? यह प्रेशर आपको उदास या तनावग्रस्त कर देता है, जबकि पुरुषों के ऊपर यह दबाव कम होता है क्योंकि समाज में उनकी उम्र शादी के लिए ज्यादा फ्लेक्सिबल मानी जाती है। हर बार जब वो अभी समय नहीं कहता है, तो आपको जैसे शहर में जिंदगी महंगी है। आपका बॉयफ्रेंड शायद सोचता है कि शादी के बाद पैसे की दिक्कत न हो। पुरुष अक्सर खुद को प्रोवाइडर मानते हैं, जबकि महिलाएं रिश्ते की भावनात्मक मजबूती पर ज्यादा जोर देती हैं। अगर उसके घर में तलाक या झगड़े हुए हैं, तो वो शादी से डर सकता है। महिलाएं अक्सर इन अनुभवों से सीखकर बेहतर रिश्ता बनाना चाहती हैं, लेकिन पुरुष इन्हें बहाना बना लेते हैं। वो कहता है कि अभी सही समय नहीं है। यह भी हो सकता है कि वह करियर या खुद पर फोकस करना चाहता है। महिलाएं रिश्ते को जीवन का हिस्सा मानती हैं, जबकि पुरुष कभी-कभी इसे अलग रखते हैं। अब सवाल यह है कि क्या इंतजार करें या फैसला लें? यहां कुछ आसान उपाय हैं जो आपको मदद करेंगे। याद रखें, रिश्ते में कुछ चीजें पैसों से नहीं खरीदी जा सकतीं, जैसे भरोसा, प्यार और कमिटमेंट। हालांकि, बातचीत सबसे जरूरी है। खुलकर बात करें- अपने बॉयफ्रेंड से शांति से बैठकर पूरी बात करें। आप उसे खुलकर बताएं कि आप इस बात से क्यों परेशान हो रही हैं। उससे उसका प्लान भी पूछें। इससे सच्चाई सामने आएगी। समय सीमा तय करें- खुद से कहें कि 6 महीने इंतजार करूंगी, अगर तब भी नहीं तो फैसला लूंगी। इससे आपको कंट्रोल मिलेगा। अपना ख्याल रखें- अकेले समय बिताएं, दोस्तों से मिलें, करियर पर फोकस करें। योग या वॉकिंग करें ताकि तनाव कम हो। प्रोफेशनल मदद लें- अगर बात नहीं बनती, तो काउंसलर से मिलें। वे आपको और आपके पार्टनर को समझने में मदद करेंगे। अपने लक्ष्यों पर सोचें-शादी आपकी जिंदगी का हिस्सा है, लेकिन सबकुछ नहीं। अगर वो तैयार नहीं, तो क्या आप खुश रह सकती हैं? आपके पार्टनर के लिए सुझाव- आपका बॉयफ्रेंड भी इस स्थिति में परेशान हो सकता है। यहां उनके लिए कुछ टिप्स- धैर्य रखें: आपकी फीलिंग्स को समझें और जल्दबाजी न करें। खुलकर बात करें: अपने डर या कारण बताएं, जैसे फाइनेंशियल चिंता। समझौता करें: अगर तैयार नहीं, तो वजह बताएं और प्लान शेयर करें। साथ मिलकर फैसला लें: यह रिश्ता दोनों का है, अकेले न सोचें। क्या इंतजार करना सही है? समय सब ठीक नहीं करता, बल्कि आपकी कोशिशें करती हैं। अगर 5 साल में वो तैयार नहीं हुआ, तो शायद आगे भी न हो। लेकिन अगर वो प्यार करता है, तो बातचीत से रास्ता निकलेगा। अगर जरूरत हो तो प्रोफेशनल मदद लें। याद रखें कि आपकी खुशी सबसे जरूरी है। 5 साल लंबा रिश्ता तोड़ना आसान नहीं होता, लेकिन अगर शादी आपकी प्राथमिकता है और वो तैयार नहीं है तो आपको सख्त फैसला लेना पड़ सकता है। हजारों लोग आपके जैसे सफर से गुजरे हैं और खुश हैं। खुद पर भरोसा करें और आगे बढ़ें। आप अकेली नहीं हैं आप मजबूत हैं। वहीं अगर आपको पार्टनर पर भरोसा है और इंतजार कर सकती हैं तो मिलकर एक समय सीमा तय कर लें।

आपस में सुनने की आदत एक ब्रेकडाउन को ब्रेकथ्रू बनाती है

कई दशक पहले की बात है, मेरे कजिन की शादी थी। हमारी पीढ़ी में यह पहली शादी थी। हम सब कजिन इतने उत्साहित

थे कि मद्रास (अब चेन्नई) में इकट्ठा हुए और तैयारियों में जुट गए। लेकिन हमेशा हंसने और खुश रहने वाली कजिन, जिसकी पांच दिन बाद शादी थी, वह अचानक हमें अवॉइड करने लगी। वह हमेशा अपने टेलीफोन वाले कमरे में बंद रहती। हम उसे सताने लगे कि उसे प्रेम हो गया है। वह गुस्से और शर्म की मिलीजुली-सी प्रतिक्रिया देती। लेकिन जब नानाजी ने आकर हमें एक अलग कहानी बताई तो लगा कि हम गलत समझ रहे थे। उन्होंने कहा कि 'वह पीड़ा में है, उसे परेशान मत करो। वह स्कूल की पुरानी ट्रॉफियां और फोटो एलबम छांट रही है। नए घर के लिए चंद सूटकेसों में उन्हें समेट नहीं पा रही। तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए। जाओ और पैकिंग में उसकी मदद करो। इसके अलावा वह पैरेंट्स का साथ छूटने और एक नया पार्टनर पाने के बीच असमंजस में भी है।' उस दिन नानाजी ने कमान संभाली। चूंकि मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ा था तो उन्होंने मुझसे साथ आने को कहा और उसके कमरे में जाकर उससे एक घंटे बातचीत की। उन्होंने खूबसूरती से समझाया कि वह अब अपने परिवार के दायरे में नए लोगों को शामिल करने वाली है।उन्होंने कहा कि 'किसी नए इंसान से शादी का मतलब माता-पिता को खोना नहीं, बल्कि एक प्रोटेक्टेड बेटी की भूमिका से बढ़कर ऐसी पार्टनर बनना है- जो दोनों परिवारों की देखभाल कर सके।' उनकी आखिरी लाइन मैं कभी नहीं भूलूंगा। उन्होंने कहा कि 'शादी ?महज नए इंसान को पाना ही नहीं, बल्कि किसी पुराने इंसान को छोड़ना भी है। जैसे कि मैं, कोई और चीज या स्कूल के पुराने एलबम भी।' वह उनसे लिपट कर रो पड़ी। उन्होंने पांच मिनट तक उसे खुलकर रोने दिया। उसी दिन मैंने अचानक-से उसमें बदलाव देखा। उसका सामान अब महज दो सूटकेसों में सिमट गया। उसी शाम हंसती, खिलखिलाती वो वापस आ गई थी। यकीन मानिए, दशकों बाद नानाजी की वो गहरी सलाह मेरे काम आई, जब मैंने अपनी बेटी को उसी स्थिति में देखा। जब वह अपना ब्राइडल ट्रूजो चुन नहीं पा रही थी, तो मैंने उससे वही बात कही। वह अकसर अपनी मां के साथ बूटीक जाती, खूबसूरत लहंगे देखती और यह कहते हुए खाली हाथ लौट आती कि उसे ब्लू का सही शेड नहीं मिल रहा। मुझे यह घटना तब याद आई, जब मैंने 10 फरवरी को ही जारी हुई किताब 'ल्व्स लेबर : हाउ टु ब्रेक एंड मेक द बॉन्ड्स ऑफ लव' में एक अच्छी शादी को लेकर बेहतरीन समझ को पढ़ा। इसमें प्रसिद्ध साइकोएनालिस्ट और लेखक स्टीफन ग्रोज ने 'सोफी' नाम के केन्द्रीय किरदार के इर्द-गिर्द प्यार, शादी, समझ और मिसअंडरस्टैंडिंग के अलग-अलग भावों पर बात की है। 40 से अधिक वर्षों तक मरीजों से हुई बातचीत के आधार पर वे यह बताते हैं कि जब हम सुनना सीखते हैं तो हमारी रिलेशनशिप हमें क्या सिखा सकती है। चूंकि वे पश्चिमी दुनिया से हैं, जहां शादियां अस्थिरताओं से गुजर कर तलाक तक पहुंच जाती हैं, तो वे बताते हैं कि जब हम अपने पार्टनर को सुनना सीख जाते हैं तो रिलेशनशिप हमें क्या सिखाती है। मसलन, अचानक से जब पति को उसका काम आनंद देने लगे तो कपल्स के बीच फ्रिक्शन शुरू हो सकता है। उनकी सलाह है कि काम के प्रति इस नए प्यार पर झगड़ने के बजाय दोनों को बात करनी चाहिए, क्योंकि 'रोमांस भी एक कार्य है और दोनों को इस पर भी कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।' फंडा यह है कि लेबर ऑफ लव जीवन भर का काम है। जब हम एक-दूसरे को ज्यादा सुनते हैं, तो इसका फल और भी मीठा हो जाता है। कभी-कभी कमियां भी सुननी चाहिए, क्योंकि इससे कई बार नया रास्ता भी निकल आता है।एन. रघुरामन

पार्टी की चर्चाओं में गर्मजोशी लानी है तो अपने पास हैरतअंगेज जानकारी रखिए

आपने कई ईवनिंग पार्टियों में देखा होगा कि कुछ लोग सबका ध्यान खींचते हैं। ऐसा नहीं कि वे सेलेब्रिटी या बहुत अमीर लोग हों, जो अपना फैशन दिखा रहे हों,

बल्कि वे वहां इकट्ठे लोगों को कुछ अनसुनी कहानियां सुना रहे होते हैं और इसीलिए पार्टी की जान बन जाते हैं। दूसरों के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन मैं तो मेहमानों की लिस्ट और उनकी संभावित रुचि के आधार पर प्लान कर लेता हूं कि उस शाम कौन-सी कहानियां शेयर करनी हैं। सोच रहे हैं कि यह कैसे प्लान होगा? यहां छोटा-सा सुझाव पेश है। अगर आप 14-16 मार्च, 2026 के दौरान किसी सोशल इवेंट या गेट-टुगेदर में शामिल हो रहे हैं तो यकीन मानिए 'ऑस्कर 2026' वहां मेहमानों के बीच चर्चा का विषय रहेगा। क्योंकि उस समय पूरी मीडिया इंडस्ट्री इसी के बारे में लिख और बोल रही होगी। इसी कारण यह उन चुनिंदा दिनों में बेहद हॉट टॉपिक होगा। मुंबई में तो वर्षों से यही रुझान रहा है। तो यहां कुछ चौंका देने वाली जानकारियां हैं, जो आपकी पार्टी की चर्चा में चमक बिखेर देंगी। इसे एकेडमी अवॉर्ड के नाम से जाना जाता है। इसका समारोह 15 मार्च, 2026 को लॉस एंजेलिस में हॉलीवुड के डॉल्बी थिएटर में होगा। इसे आप 16 मार्च 2026 को भारतीय समयानुसार सुबह 4.30 बजे अपने टीवी पर देख सकते हैं। थिएटर में लगभग 3,400 सीटें हैं, जो नॉमिनेटेड कलाकारों, उनके परिवारों, प्रजेंटर्स, ब्रॉडकास्ट क्रू, प्रमुख स्पॉन्सर्स और परफॉर्मर्स के लिए आरक्षित रहती हैं। ऑस्कर 2026 में इस बार 'बेस्ट कास्टिंग' के लिए भी एक नया अवॉर्ड दिया जाएगा, जिससे कुल कैटेगरीज अब 24 हो जाएंगी। ऑस्कर के जिन अनमोल स्टैचुएट्स को हर विजेता घर ले जाएगा, उनके भी बड़े रोचक तथ्य हैं। हर मूर्ति 13.5 इंच लंबी और 3.86-3.9 किलोग्राम वजनी होती है, यानी लगभग एक लैपटॉप के वजन के बराबर। हर विजेता को एक्सेप्टेंस स्पीच देते हुए इसे हाथ में थामना होता है।

ठोस कांस्य से बनी इस ट्रॉफी पर 24 कैरेट सोने की परत होती है। मेरे जैसा सामान्य व्यक्ति सोच सकता है कि ऑस्कर ट्रॉफियां बड़े पैमाने पर बनाई जाती होंगी। लेकिन आपको हैरानी होगी कि हर स्टेच्यू को 20 कारीगरों का एक समूह हाथों से बनाता है और हर साल निर्माण की इस प्रक्रिया में छह महीने लगते हैं। हर ऑस्कर अपने आप में एक मूर्ति है, जिसमें सबसे पहले वैक्स फिगर बनाया जाता है। इसके चारों ओर कठोर और हीट रेजिस्टेंट आवरण बनाने के लिए उसे सिरेमिक स्लरी और सिलिका सैंड में डुबोया जाता है। फिर मोम को पिघलाकर उसकी जगह पिघला कांस्य भरा जाता है। ठंडा होने पर सिरेमिक खोल तोड़ते हैं और उसमें छोटे होते हैं। अंतिम चरण में उस पर सोने की परत चढ़ाई जाती है। परत चढ़ाने की प्रक्रिया इतनी हाई-टेक होती है कि एकेडमी उसी एप्नर टेक्नोलॉजी कंपनी की सेवाएं लेती है, जो नासा के उपकरणों की प्लेटिंग करती है।

सोने की परत इलेक्ट्रोप्लेटिंग से चढ़ाई जाती है। मूर्ति को रासायनिक घोल में डुबोकर इलेक्ट्रिक करंट के जरिए सोने के कणों की निकल प्लेटेड कांस्य से बॉन्डिंग कराई जाती है। इससे सोना कभी उखड़ता नहीं है, हालांकि विजेताओं को आगाह किया जाता है कि इंसान के हाथों का तेल लगने से इसकी चमक कम हो सकती है। एक आखिरी बात। ऑस्कर की घोषणा से पहले अकाउंटिंग फर्म प्राइसवॉटरहाउसकूपर्स (पीडब्ल्यूसी) के केवल दो पार्टनरों को ही परिणाम की जानकारी होती है। समारोह के दौरान वे मंच के किनारों पर खड़े होते हैं, ताकि प्रजेन्टर्स को सही लिफाफे दे सकें। फंडा यह है कि अगर आप एक ऐसे स्टोरीटेलर हैं, जो अपनी कहानियों पर ज्ञान की नई परत चढ़ा सकते हैं तो मैं शर्तिया कह सकता हूं कि आप ही सब को आकर्षित करने वाली 'क्वीन हनी-बी' बनेंगे। एन. रघुरामन

गुलामी के प्रतीकों को हटाने का हमें स्वागत करना चाहिए

यूं तो मैं नई दिल्ली की सड़कों, प्रतिमाओं और इमारतों में सरकार द्वारा किए गए हर परिवर्तन का समर्थन नहीं करता हूं। मिसाल के तौर पर, मुझे समझ नहीं आता कि राजपथ का नाम बदलकर कर्तव्य पथ क्यों किया गया। न ही मैं यह समझ पाया हूं कि मुगल गार्डन्स का नाम बदलकर अमृत उद्यान क्यों किया गया, क्योंकि वह उद्यान मुगल शैली में ही निर्मित है। लेकिन इस महीने जब राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में एडविन लुटियन्स की प्रतिमा के स्थान पर सी. राजगोपालाचारी की प्रतिमा का अनावरण किया, तो इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। लुटियन्स बेशक एक प्रतिभाशाली आर्किटेक्ट रहे होंगे, लेकिन वे असंदिग्ध नस्लवादी थे। भारतीयों के प्रति उनके मन में गहरी अवमानना की भावना थी, जिसे उन्होंने कभी नहीं छिपाया। इसका अकाट्य प्रमाण 1985 में प्रकाशित पुस्तक 'द लेटर्स ऑफ एडविन लुटियन्स टु हिज वाइफ लेडी एमिली' में मिलता है। भारत का कुछ भी लुटियन्स को प्रभावित नहीं कर सका था- न वास्तुकला, न दर्शन, न संस्कृति और यहां के लोगों की चमड़ी का रंग तो हरगिज नहीं। इंदौर के डेली कॉलेज में उन्होंने छात्रों को एक नस्लवादी शब्द से सम्बोधित किया था। बनारस में उन्होंने पाया कि यहां 'हर तरह के काले लोग, हर तरह का काम करते' हैं। मद्रास के लोगों के लिए तो उन्होंने और अभद्र टिप्पणी की।एक अन्य प्रसंग में उन्होंने लिखा कि 'भारत के लोगों से कोई उम्मीद नहीं की जा सकती'। भारतीय धर्मों में उन्हें कोई बौद्धिकता नजर नहीं आई। अपने निजी स्टाफ के नामों पर भी वे फब्ती कसने से नहीं चूके। उन्होंने कहा, 'ये लोग वो तमाम हरकतें करते हैं, जो किसी भी गोरे साहब को ऊबा सकती हैं।'भारतीय वास्तुकला भी उन्हें प्रभावित नहीं कर पाई। बनारस के घाटों के किनारे स्थित मंदिर उन्हें 'बच्चों के खिलौने वाले पेड़ों' जैसे प्रतीत हुए। कुतुब मीनार की गढ़न उनके अनुसार बेपरवाह और बेढंगी थी। मुम्बई में होलकर का महल उन्हें अभद्र और उदयपुर का राजप्रासाद उन्हें आदिम लगा था। ताजमहल को भी उन्होंने खारिज करते हुए कह दिया कि वह यूनानियों और रोमनों की कृतियों के आसपास भी नहीं ठहरता। उनके साथ काम करने वाले भारतीय शिल्पकारों के बारे में उनकी टिप्पणी थी कि 'इन्हें भद्दे पैटर्न्स और अनगढ़ देवप्रतिमाएं बनाने के सिवा कुछ नहीं आता'। एक निर्माण के अंतिम चरणों में काम का निरीक्षण करते हुए उन्होंने लिखा कि 'लापरवाह भारतीय हमेशा की तरह चीजें बरबाद कर रहे थे और बेतरतीबी फैला रहे थे'। वे अपनी पत्नी के लिए बुद्ध प्रतिमा खरीदना चाहते थे, पर उन्हें कुछ भी मानक के अनुरूप नहीं लगा। उन्होंने लिखा- 'हे भगवान, यहां सबकुछ कितना कुरूप है।' यहां तक कि राष्ट्रपति भवन के भव्य गुम्बद को भी लुटियन्स ने इस प्रकार कल्पित किया था कि वह 'ब्रिटिश सैनिक, अधिकारी, मिशनरी या वायसराय के टोपीधारी सिर की छवि' उत्पन्न करे, जबकि इसे लुटियन्स के समर्थक भारतीय वास्तुकला से प्रेरित बताते हैं। इन तमाम उद्धरणों से स्पष्ट है कि हम भारतीयों और हमारी महान सभ्यता के प्रति लुटियन्स का रवैया एक कुपढ़, बददिमाग और नस्लवादी व्यक्ति का था। ऐसे में स्वयं राष्ट्रपति भवन में लुटियन्स की प्रतिमा का होना हमारी औपनिवेशिक विस्मृति का दयनीय प्रतीक था। यह पूर्णतः उपयुक्त है कि अब लुटियन्स की प्रतिमा को हटाकर उन चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की प्रतिमा को स्थापित किया गया है, जो स्वतंत्र भारत के प्रथम और एकमात्र गवर्नर-जनरल थे। राजाजी एक सच्चे गांधीवादी और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें मद्रास प्रेसिडेंसी के प्रीमियर, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और केंद्रीय गृह मंत्री के रूप में व्यापक राजनीतिक-प्रशासनिक अनुभव प्राप्त था। वे चिंतक और लेखक भी थे। उनका साहित्यिक योगदान- जिसमें रामायण और महाभारत के अनुवादों से लेकर संस्कृति और राजनीति पर चिंतनपरक निबंध तक शामिल हैं- भारतीय बौद्धिक परम्परा को और समृद्ध बनाते हैं। हम ऐसे गणराज्य हैं, जो अपनी सार्वजनिक स्मृति को अपनी ही मिट्टी में रोपना चाहता है। हमें सरकार को इस निर्णय के लिए बधाई देनी चाहिए, जो औपनिवेशिक इमारतें बनाने वाले के बजाय राष्ट्र की अंतश्चेतना के निर्माण में योगदान देने वाले व्यक्ति की स्मृति को समर्पित है।

अपने बच्चों को संकट से निपटना सिखाएं

आज के दौर में 'अर्श से फर्श' तक पहुंचने वाले कई

कारोबारी साम्राज्य उन लोगों ने खड़े किए हैं, जिन्होंने जमीन पर उतरकर कड़ी मेहनत की है। लेकिन, उनकी अगली पीढ़ी एक ऐसे दौर में पली-बढ़ी है जहां सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं रही।

उन्होंने कभी किसी बड़े आर्थिक संकट का कड़वा स्वाद नहीं चखा।

यही कारण है कि संपत्ति बनाने वाली पीढ़ी और उसे विरासत में पाने वाली पीढ़ी के बीच सोच की बड़ी खाई पैदा हो गई है। पिछले नौ दिनों से खाड़ी देशों और मिडिल ईस्ट में छिड़े युद्ध ने उन माता-पिता की नींद उड़ा दी है, जिन्होंने शून्य से कारोबार खड़ा किया।

जहां वे संपत्ति और गिरते वैल्युएशन को लेकर रात भर जाग रहे हैं, वहीं उनके बच्चे बेफिक्र नजर आते हैं।

यह बेफिक्री किसी बहादुरी का नतीजा नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत और संकटों के अनुभव की कमी है। आज कई बड़े कारोबारी माता-पिता ठीक वैसी ही स्थिति में हैं, जैसी 2008 के वैश्विक संकट के दौरान 'लेहमैन ब्रदर्स' की थी।

रातोंरात वे कीमती संपत्तियां 'कबाड़' बन गईं,

याद कीजिए, बैलेंस शीट पर भारी-भरकम संपत्ति जिनका कोई खरीदार नहीं बचा था।

होने के बावजूद वह कंपनी दिवालिया हो गई थी। कारण? जब संकट आया और वे अपनी संपत्तियों को बेचने बाजार निकले, तो उन्हें वो कीमत नहीं मिली जो कागजों पर दर्ज थी।

2008 के संकट के दौरान गोल्डमैन सैक्स का नेतृत्व करने वाले लॉयड ब्लैंकफीन भी इसी बात का समर्थन करते हैं। 71 वर्षीय ब्लैंकफीन का उन चिंतित पिताओं को मशविरा है जो आने वाले आर्थिक संकट से डरे हुए हैं, 'संपत्तियों को लंबे समय तक दबाकर बैठने के बजाय, सही समय पर उन्हें बेच देने में ही समझदारी है। मैं यह नहीं कह रहा कि संकट कल ही आ जाएगा, लेकिन जब युद्ध जैसे हालात बनते हैं, तो आप पाएंगे कि जिन संपत्तियों को आपने ऊंची कीमतों पर रखा था, बाजार में उतनी कीमत नहीं रह गई।

' आज दुनिया के सामने 'स्टैगफ्लेशन' का खतरा मंडरा रहा है। आसान शब्दों में कहें तो आर्थिक विकास की रफ्तार थम जाना, पर महंगाई बढ़ते रहना। ऐसे में बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि वे 'स्थायित्व के भ्रम' में न जिएं, बल्कि दुनिया में बदल रहे भू-राजनैतिक समीकरणों के आधार पर अपनी रणनीति बनाएं। मैनेजमेंट टिपः अपने बच्चों को 'संकट के लिए तैयार' रहना सिखाएं।

बदलते दौर में अपनी योजनाओं को लचीला और मजबूत रखने का यही एकमात्र तरीका है। बच्चों को उस दुनिया के लिए तैयार न करें जो अब अस्तित्व में ही नहीं है।

अपने बच्चों को सुरक्षा जरूर दें लेकिन चुनौतियों से डरें नहीं

हाल के दिनों में जापान से 'पंच' नामक एक बंदर के वीडियो लगातार वायरल हुए हैं। यह 7 महीने का मकाक

बंदर है, जिसे एक चिड़ियाघर में रखा गया है। उसकी मां ने उसे त्याग दिया था और अन्य बंदर उसे तंग कर रहे थे। उसको दुःखी देखकर चिड़ियाघर संचालक ने उसे एक सॉफ्ट टॉय दे दिया। फिर तो, 'पंच' उस सॉफ्ट टॉय को ही सीने से लगाए घूमता रहा, मानो उसकी खामोश मौजूदगी में अपने लिए सुकून खोज रहा हो। यह दृश्य संवेदनशील भी था और असहज करने वाला भी। एक सामाजिक प्राणी- जिसे प्रकृति ने दूसरों के संग-साथ के लिए तैयार किया था- वह अपनी भावनात्मक जरूरतों के लिए एक खिलौने का सहारा ले रहा था। एक डॉक्टर और पैरेंटिंग व बाल-विकास के क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति होने के नाते वह दृश्य मुझे दो गहरी सच्चाइयों की याद दिलाता है। पहली, सुकून, स्पर्श और भावनात्मक सुरक्षा की जरूरत हमारे जैविक ढांचे में गहराई से निहित है। दूसरी, खिलौने- चाहे वे इंसान के बच्चे हों या बंदर के- भावनाओं को संतुलित करने और बाल विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। सॉफ्ट टॉय्ज विकासात्मक मनोविज्ञान में ट्रांजिशनल ऑब्जेक्ट कहे जाते हैं। टेडी बियर या कोई डॉल बच्चे को निर्भरता और स्वतंत्रता के बीच की दूरी पाटने में मदद करती है। जब कोई बच्चा सोते समय अपने टेडी को गले लगाता है, तो वह कमजोरी नहीं दिखा रहा होता; आत्म-सांत्वना का अभ्यास कर रहा होता है। वह सीख रहा होता है कि माता-पिता की अनुपस्थिति में भी सुरक्षा की भावना भीतर कैसे बनाई रखी जाए।भारतीय माता-पिता बाल विकास में अकसर दो चरम सीमाओं पर रहते हैं। एक ओर तो हम बच्चों के बेहद करीब रहते हैं- कई वर्षों तक साथ सुलाना, हर गतिविधि पर नजर रखना, समस्या आने से पहले ही समाधान दे देना। दूसरी ओर, कभी-कभी हम बच्चे के खिलौनों से भावनात्मक लगाव को बचकाना कहकर जल्दी छुड़ाने की कोशिश करते हैं। दोनों ही सही नहीं हैं। यदि उम्र के अनुरूप और संतुलित तरीके से इस्तेमाल करें, तो खिलौने बाल विकास का सशक्त साधन हैं। एक वर्ष तक के शिशुओं के लिए खिलौने संवेदनात्मक अनुभव का विकास करते हैं। एक से तीन वर्ष में वे उसकी कल्पनाशीलता के साथी बन जाते हैं। बच्चा उन्हें खाना खिलाता है, सुलाता है, डांटता है तो अपने ही अनुभवों को दोहरा रहा होता है। तीन से छह वर्ष की उम्र में गुड़िया, कठपुतली और कहानी आधारित पात्र भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम बन जाते हैं। जब बच्चा कहता है टेडी उदास है, तो वह अपनी ही उदासी व्यक्त कर रहा होता है। ऐसे में संवेदनशील संवाद उसकी भावनात्मक समझ को मजबूत करता है। लेकिन 'पंच' की कहानी का दूसरा पक्ष भी है। खिलौने सुकून दे सकते हैं, पर वे वास्तविक सामाजिक संबंधों और जीवन की चुनौतियों का स्थान नहीं ले सकते। भारतीय पैरेंटिंग में यही चूक दिखती है। प्यार और चिंता के चलते हम बच्चों को जरूरत से ज्यादा सुरक्षा देने लगते हैं। हर जगह साथ जाना, हर विवाद में हस्तक्षेप करना, हर छोटी असुविधा को तुरंत दूर करना- इससे बच्चों की निर्णय लेने की क्षमता देरी से विकसित हो पाती है। जबकि कई पश्चिमी समाजों में स्वायत्तता जल्दी दी जाती है- खुद अपने काम करना, जेब खर्च संभालना, दोस्तों के मतभेद सुलझाना। दोनों मॉडल पूर्ण नहीं हैं। भावनात्मक आधार के बिना अत्यधिक स्वतंत्रता उपेक्षा बन सकती है और चुनौतियों के बिना अत्यधिक संरक्षण दुर्बलता पैदा कर सकता है। बच्चे कठिनाइयों को हटाने से नहीं, छोटी-छोटी चुनौतियों का सामना करके परिपक्व होते हैं। बाल-विकास के शोध बताते हैं कि असली विकास कठिन परिस्थितियों में होता है। मंच पर बोलना, परीक्षा की घबराहट झेलना- इन सबमें बच्चे को स्वयं कोशिश करने देना जरूरी है। अभिभावकों के लिए संदेश साफ है : कृत्रिम कठिनाइयां पैदा न करें, न ही स्नेह कम करें, बल्कि संतुलन बनाएं। यदि कोई प्रिय टेडी बच्चे को सुकून देता है, तो समझें कि वह बच्चे के भावनात्मक विकास का साथी है। साथ ही बच्चों के अनुभवों का दायरा बढ़ाएं। स्कूल बैग खुद पैक करने दें। खेल में हार का हल्का-सा दुख महसूस करने दें। 'पंच' ने हमें याद दिलाया है कि सामाजिक जरूरतें अधूरी रह जाएं तो क्या होता है। माता-पिता के रूप में हमारा काम बचपन से ही असुविधाओं को पूरी तरह से हटाना नहीं है। बल्कि हमारा काम बच्चों को एक ऐसा सुरक्षित आधार देना है, जहां से बच्चा बाहर जाए, ठोकर खाए, सीखे और फिर लौट आए। डॉ. चन्द्रकान्त लहारिया (ये लेखक के अपने विचार हैं)

सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर एक्साइज ड्यूटी 10-10 रुपए घटाई,कंपनियां दाम बढ़ा सकती थीं, इसे रोकने के लिए फैसला

ऐसी स्थिति में एक्साइज ड्यूटी में की गई कटौती केवल

एक 'कुशन' का काम करेगी ताकि कीमतें बहुत ज्यादा न बढ़ें। सवाल 6: इस कटौती से सरकार को क्या नुकसान होगा? जवाबः एक्साइज ड्यूटी कम करने से केंद्र सरकार के राजस्व में कमी आएगी। पेट्रोलियम मंत्री के अनुसार, सरकार ने यह फैसला इसलिए लिया ताकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आए 'शॉक' का पूरा असर भारतीय उपभोक्ताओं पर न पड़े और उन्हें महंगाई से बचाया जा सके। सवालः 7 क्या राज्य सरकारें भी अब वैट कम करेंगी? जवाबः आमतौर पर केंद्र द्वारा ड्यूटी घटाने के बाद राज्यों पर भी वैट कम करने का दबाव बढ़ता है। अगर राज्य सरकारें अपने हिस्से का टैक्स कम करती हैं, तभी उपभोक्ताओं को पंप पर रु2 से रु5 तक की वास्तविक राहत मिल सकती है। सवालः क्या यह सही है कि कच्चा तेल महंगा होने पर कंपनियां दाम बढ़ा देती हैं, लेकिन सस्ता होने पर नहीं घटातीं? जवाबः यह बात काफी हद तक सही है और इसके पीछे मुख्य रूप से 'अंडर-रिकवरी' का गणित काम करता है। असल में, जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल अचानक महंगा होता है, तो सरकार के दबाव या चुनाव जैसे कारणों से कंपनियां तुरंत कीमतें नहीं बढ़ातीं और घाटा सहती हैं। बाद में जब कच्चा तेल सस्ता होता है, तो कंपनियां दाम घटाने के बजाय उस पुराने घाटे की भरपाई करती हैं। इसके अलावा, अक्सर कच्चे तेल की कीमतें गिरने पर केंद्र सरकार अपनी एक्साइज ड्यूटी या राज्य सरकारें अपना वैट बढ़ा देती हैं, जिससे गिरावट का फायदा ग्राहकों तक पहुंचने के बजाय सरकारी खजाने में चला जाता है। साथ ही, डॉलर के मुकाबले रुपए की कमजोरी और पुराने महंगे स्टॉक की लागत भी कंपनियों को कीमतें कम करने से रोकती है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज 27 मार्च को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मुख्यमंत्रियों से बात करेंगे। इसमें ईरान जंग के बाद बिगड़े हालात पर चर्चा संभव है। चुनावी राज्यों के सीएम इसमें शामिल नहीं होंगे। मोदी ने 24 मार्च को राज्यसभा में कहा था कि ईरान जंग जारी रही तो इसके गंभीर नतीजे होंगे। आने वाला समय कोरोनाकाल जैसी परीक्षा वाला होगा। केंद्र और राज्य को मिलकर काम करना होगा। वहीं, सरकार ने आज देश में पेट्रोल, डीजल और गैस की कमी की खबरों को खारिज कर दिया है। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने कहा कि दुनिया में कुछ भी हो जाए, भारत के पास 60 दिन का पेट्रोल, डीजल है।

इंटरनेट ब्लैकआउट का डर! ऑनलाइन पेमेंट से लेकर ई-कॉमर्स तक पर संकट,ईरान ने समुद्र के नीचे छेड़ा युद्ध

तेहरान। ईरान-अमेरिका/इजरायल युद्ध अब अलग स्तर पर पहुंच गया है। हाल ही में ईरान ने चेतावनी दी थी कि वह लाल

सागर के नीचे बिछी इंटरनेट केबल्स को काट सकता है। अगर ऐसा होता है तो भारत समेत दुनिया के कई देशों में इंटरनेट ब्लैकआउट हो जाएगा। इससे लोगों को ऑनलाइन पेमेंट करने से लेकर ई-कॉमर्स पर सामान ऑर्डर करने तक में परेशानी आ सकती है। दरअसल, ईरान युद्ध के कारण पश्चिम एशिया में तनाव पैदा हो गया है। यह अब भारत के डिजिटल भविष्य के लिए चुनौती बन गया है। दरअसल, इस युद्ध के कारण समुद्र के नीचे डेटा केबल्स बिछी हुई हैं। इन पर अब खतरा मंडरा रहा है। ईरान ने इन केबल्स को काटने की धमकी दी है। ये डेटा केबल भारत को दुनिया से जोड़ती हैं। इकनॉमिक टाइम्स के अनुसार इस खतरे को लेकर केंद्र सरकार ने टेलीकॉम कंपनियों और केबल ऑपरेटरों को अलर्ट जारी किया है। दूरसंचार विभाग ने कंपनियों से संभावित जोखिमों का विश्लेषण करने और वैकल्पिक रास्ते तैयार रखने को कहा है। होर्मुज और लाल सागर में बड़ा खतरा- भारत का अमेरिका और यूरोप के साथ होने वाला एक-तिहाई डेटा ट्रैफिक होर्मुज जलडमरूमध्य और लाल सागर के रास्ते गुजरता है। ईरान की ओर से इन समुद्री मार्गों में केबल्स को नुकसान पहुंचाने की धमकियों ने चिंता बढ़ा दी है।अगर ये केबल्स कटती हैं, तो वित्तीय लेनदेन, ई-कॉमर्स, सोशल मीडिया और आईटी सेक्टर का कामकाज ठप हो सकता है। कुछ ट्रैफिक को सिंगापुर के रास्ते मोड़ा जा सकता है, लेकिन वह पूरे देश का लोड उठाने के लिए पर्याप्त नहीं है। साथ ही प्रशांत महासागर का रास्ता लंबा और बेहद महंगा है, जिससे इंटरनेट की स्पीड कम हो सकती है। ऐसे में इंटरनेट यूजर्स को धीमी स्पीड का सामना करना पड़ सकता है।हर्षा राम, हेड (नेटवर्क बिजनेस), सिफी टेक्नोलॉजीज-'होर्मुज जलडमरूमध्य और लाल सागर में बिछाई गई डेटा केबल्स पर भारत काफी निर्भर है। अगर ईरान इन्हें नुकसान पहुंचाता है तो इंटरनेट के मामले में भारत को भी नुकसान होगा। क्या-क्या जोखिम हो सकते हैं, उनके आकलन के लिए सरकार स्टेकहोल्डर्स के साथ बातचीत कर रही है।'हाल ही में सऊदी अरब के जेद्दा के पास कई प्रमुख केबल सिस्टम- एयरटेल के SMW4, IMEWE और FALCON में कट की घटनाएं सामने आई हैं। इसके अलावा टाटा कम्युनिकेशंस के TATA TGN-Gulf Deewj Africa Pearls जैसे नेटवर्क भी जोखिम में हैं। रिलायंस जियो के निर्माणाधीन 'इंडिया-यूरोप-एक्सप्रेस' और 'इंडिया-एशिया-एक्सप्रेस' और गूगल के 'ब्लू-रमन' और 'थिवारू' जैसे प्रोजेक्ट्स पर भी जोखिम है। एक अधिकारी ने कहा कि आमतौर पर कंपनियां छोटी खराबी के लिए अतिरिक्त क्षमता रखती हैं, लेकिन युद्ध जैसी स्थिति के लिए तैयारी नहीं थी।भारत का लक्ष्य खुद को दुनिया का बड़ा डेटा सेंटर हब बनाना है। इसमें 270 अरब डॉलर के निवेश की उम्मीद है। यह पूरा सपना समुद्र के नीचे बिछी मजबूत कनेक्टिविटी पर टिका है। अगर युद्ध लंबा चला तो इसका असर भारत के डेटा प्रोजेक्ट पर पड़ सकता है। मेटा प्लेटफॉर्म्स और गूगल जैसी कंपनियों की नई केबल परियोजनाएं भी भारत से जुड़ने की योजना में हैं। गूगल के सुंदर पिचाई की ओर से हाल में घोषित 'इंडिया-अमेरिका कनेक्ट' पहल पर भी इस युद्ध के कारण अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं।टेलीकॉम दिग्गजों ने भारत सरकार से आग्रह किया है कि वे ईरान के साथ कूटनीतिक बातचीत करें ताकि इन केबल्स को युद्ध का निशाना न बनाया जाए। राहत की बात यह है कि ईरान ने हाल ही में भारत आने वाले कुछ जहाजों को रास्ता दिया है, जिससे बातचीत सफल होने की उम्मीद बढ़ी है।

टोंगा में 7.6 तीव्रता के भीषण भूकंप से मचा हड़कंप, यूएसजीएस ने जारी किया अलर्ट, क्या आने वाली है सुनामी?

नुकुअलोफा। यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे (यूएसजीएस) के मुताबिक मंगलवार को टोंगा क्षेत्र के नेयाफू में 7.6 तीव्रता का भूकंप

आया है। यूएसजीएस के मुताबिक यह भूकंप 235 किलोमीटर से ज्यादा की गहराई पर आया था। अभी तक किसी भी तरह के नुकसान या चोट की कोई तत्काल रिपोर्ट नहीं मिली है। भूकंप टोंगा के नेइआफू से 153 किलोमीटर पश्चिम में आया था। टोंगा दक्षिण प्रशांत महासागर में 171 द्वीपों का एक समूह है। यूएसजीएस के डेटा के मुताबित यह भूकंप लगभग 4:37 पर 237.5 किलोमीटर की गहराई पर आया था। पैसिफिक सुनामी चेतावनी केंद्र ने बताया है कि सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की गई है क्योंकि भूकंप पृथ्वी के बहुत ज्यादा अंदर आया था। यह घटना टोंगा के हिहिफो में 6.2 तीव्रता का भूकंप आने के ठीक एक दिन बाद हुई है। यूएसजीएस के मुताबिक सोमवार को आया यह भूकंप 79.7 किलोमीटर की गहराई पर आया था। नेपाल में भी सोमवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। दोपहर के समय उसके सुदूरपश्चिम प्रांत में 4.1 तीव्रता के झटके आए थे।रिपोर्ट के मुताबिक जान-माल के किसी भी नुकसान की तत्काल कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र के मुताबिक इस भूकंप से सुनामी का कोई खतरा नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि भूकंप धरती के बहुत अंदर आया था। आमतौर पर उथले भूकंप सुनामी पैदा करने के लिए अधिक जिम्मेदार होते हैं। वहीं नेपाल को लेकर भूकंप निगरानी और अनुसंधान केंद्र ने कहा है कि भूकंप के झटके दोपहर 1:14 बजे दर्ज किए गए। भूकंप का केंद्र बजहांग के रायल क्षेत्र के निकट स्थित था। पड़ोसी जिलों जिनमें बाजुरा और बैतड़ी शामिल हैं, वहां के निवासियों ने भी भूकंप के झटके महसूस किए।17 मार्च को सुदूरपश्चिम प्रांत में 4 तीव्रता का भूकंप आया। राष्ट्रीय भूकंप निगरानी और अनुसंधान केंद्र के अनुसार यह भूकंप दार्चुला जिले के सीताउला इलाके में आया था। नेपाल में करीब करीब हर साल कई बार भूकंप आते हैं। दुनिया के सबसे सक्रिय टेक्टोनिक जोन में से एक में स्थित है जिससे यह भूकंपों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है। यह हिमालयी देश दुनिया के सबसे अधिक भूकंप-संभावित देशों में 11वें स्थान पर है।

'मेट्रो शहर बने चलते-फिरते पार्किंग लॉट', राघव चड्ढा ने अब सरकार से की नेशनल डी-कंजेशन मिशन की मांग

नयी दिल्ली। देश के बड़े महानगरों में बढ़ती ट्रैफिक की

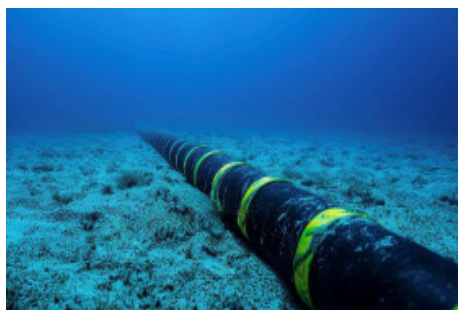

समस्या को लेकर आम आदमी पार्टी सांसद राघव चड्ढा ने संसद में चिंता जताई। उन्होंने कहा, सरकार से कहा कि बेंगलुरु, पुणे, मुंबई, कोलकाता, दिल्ली और चेन्नई जैसे शहरों में एक आम यात्री हर साल 100 से 168 घंटे तक ट्रैफिक में फंसा रहता है, जिससे उत्पादकता, ईंधन और लोगों की जीवन गुणवत्ता पर बड़ा असर पड़ रहा है। राज्यसभा में अपनी बात करते हुए राघव चड्ढा ने कहा, सुबह-शाम दिल्ली में आश्रम, धौला कुंआ या फिर एनएच-8 के दिल्ली-गुड़गांव हाईवे, बेंगलुरु, पुणे, मुंबई, कोलकाता या फिर चेन्नई जैसे शहरों में आपको कहीं जाना हो तो आपको लगेगा कि आप रोड पर नहीं बल्कि एक बड़ी पार्किंग एरिया में हैं।आप सांसद ने आगे कहा, ट्रैफिक के कारण लोग कार में बैठकर ऑफिस का काम कर रहे होते हैं, जूम मीटिंग अटेंड कर रहे होते हैं। उन्होंने कहा, यह सिर्फ एक समस्या नहीं है, यह अर्थव्यवस्था का नुकसान भी है। आंकड़ें पेश करते हुए राघव चड्ढा ने कहा, बेंगलुरु में एक कम्प्यूटर हर साल 168 घंटे ट्रैफिक में फंसा रहता है। दिल्ली में लगभग 104 घंटे, पुणे में 152 घंटे, कोलकाता 110 घंटे चेन्नई में 100 घंटे और मुंबई में 126 घंटे प्रतिवर्ष लोगों के ट्रैफिक में निकल जाते हैं।राघव चड्ढा ने कहा, यह सिर्फ समय की बर्बादी नहीं है, बल्कि उत्पादकता में कमी, ईंधन की बर्बादी, वायु प्रदूषण, जीवन की गुणवत्ता में गिरावट की समस्या है। आप सांसद ने कहा, यह समस्या हर साल बढ़ती जा रही है। पिछले साल देश में लगभग ढाई करोड़ नए वाहनों का रजिस्ट्रेशन हुआ।उन्होंने कहा, सरकार से मांग की मेट्रो शहरों के लिए नेशनल अर्बन डी-कंजेशन मिशन बनाया जाए। बेहतर पब्लिक ट्रांसपोर्ट, स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट और वैज्ञानिक पार्किंग नीति लागू करने पर जोर दिया।

'पाकिस्तान कतर नहीं, जमकर करेंगे धुनाई',इस्लामाबाद की इजरायल को धमकी, दूतावास के पास हमले से भड़का

इस्लामाबाद। ईरान पर इजरायल और अमेरिका के

हमलों के बीच पाकिस्तान ने अपने राजनयिकों की सुरक्षा को लेकर चेतावनी दी है। इस्लामाबाद ने कह कि ईरान हो या कहीं और, उसके अधिकारियों को किसी भी तरह का खतरा होने पर करारा जवाब दिया जाएगा। इसमें कहा गया है कि इजरायल याद रखे कि पाकिस्तान कोई कतर नहीं है। पाकिस्तान की यह चेतावनी पाकिस्तानी दूतावास के पास इजरायल-अमेरिका के हमले की खबरों के बाद आई है। पाकिस्तान स्ट्रेटेजिक फोरम के एक बयान में कहा गया कि 'इजरायल को यह याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान कोई कतर नहीं है। अगर दुनिया में कहीं भी हमारे राजनयिकों को कोई नुकसान पहुंचा तो हम उनकी बुरी तरह से धुनाई कर देंगे।'यह धमकी गुरुवार को ईरान की राजधानी तेहरान में इजरायल और अमेरिका के हवाई हमलों की रिपोर्ट के बाद आई है। ये हमले जिन जगहों पर हुए थे, उनमें पाकिस्तान के राजदूत के आवास और तेहरान स्थित पाकिस्तानी दूतावास के आसपास के इलाके भी शामिल थे। रिपोर्ट बताती हैं कि हमले में पाकिस्तान के दूतावास और उसके कर्मचारियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। लेकिन धमाकों से आसपास की कई इमारतें जोर से हिल गईं। इजरायल और अमेरिका ने ईरान की राजधानी तेहरान समेत देश के अलग-अलग हिस्सों में हमले जारी रखे हैं। पाकिस्तानी दूतावास के पास हमला क्यों अहम? पाकिस्तानी दूतावास के पास हुए हमले ऐसे समय में हुए हैं, जब इस्लामाबाद युद्ध समाप्त करने के लिए अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थता की कोशिश कर रहा है। पाकिस्तान के विदेश विभाग के अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि अगर दोनों पक्ष चाहें तो इस्लामाबाद अमेरिका और ईरान के बीच मेजबानी कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के विशेष दूत स्वीट विटकॉफ ने कहा है कि पाकिस्तान के जरिए 15 पॉइंट एक्शन लिस्ट तेहरान को सौंपी गई है। एक तरफ पाकिस्तान मध्यस्थता की कोशिश कर रहा है, उसी समय उसके दूतावास के पास हमला होना इस्लामाबाद को लेकर इजरायल और अमेरिका की गंभीरता पर सवाल खड़े करता है।

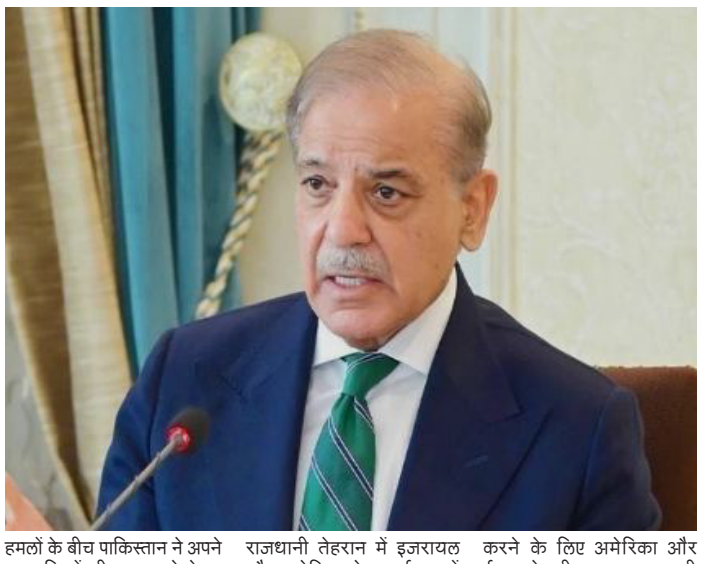

रूस ने भारत को दी दोहरी खुशखबरी, दोनों एस-400 एयर डिफेंस इसी साल देगा

मॉस्को। रूस ने संकेत दिए हैं को 2027 के बदले इसी साल यानि 2026 में ही एस-400 एयर

डिफेंस सिस्टम के बाकी बचे दो यूनिट भारत को सौंप देगा। इनमें से एक यूनिट अगले महीने ही मिलने की उम्मीद है जबकि अंतिम एस-400 की संभावित डिलीवरी नवंबर में कर दी जाएगी। मामले से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने पुष्टि की है कि समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए भारत अपने रूसी समकक्षों के साथ नजदीकी संपर्क में है। लेकिन सबसे ज्यादा दिलचस्प पैंटसिर शॉर्ट-रेंज एयर डिफेंस सिस्टम का ऑफर है। इसे एस-400 का बॉडीगार्ड कहा जाता है।ऑपरेशन सिंदूर के दौरान एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम अपनी क्षमता दिखा चुका है। इसने 314 किलोमीटर दूर पाकिस्तान अवाक्स एयरक्राफ्ट पर सटीक निशाना लगाकर उसे मार गिराया था। इसके अलावा पाकिस्तानी मिसाइलों को इंटरसेप्ट करने में भी एस-400 ने अहम भूमिका निभाई थी। रूस ने एस-400 के साथ साथ उसके बॉडीगार्ड कहे जाने वाले Pantsir-S1M का भी ऑफर दिया है। ये ड्रोन और क्रूज मिसाइल हमलों से एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम को बचाता है। रक्षा मंत्रालय के अधिकारी ने कहा कि 'बाकी बचे दो एस-400 प्रणालियों में से एक की डिलीवरी अगले महीने यानि अप्रैल में होगी और अंतिम प्रणाली की डिलीवरी इस साल नवंबर तक हो जाएगी।' अधिकारी का कहना था कि यूक्रेन युद्ध की वजह से बाकी बचे 2 एस-400 की डिलीवरी बार बार टल रही थी और रूस ने पहले संकेत दिया था कि डिलीवरी 2027 तक ही हो पाएगी। लेकिन अब वो इसी साल दोनों एस-400 की डिलीवरी कर रहे हैं।'भारत ने 2018 में रूस के साथ एस-400 सिस्टम के 5 स्क्वाड्रन के लिए 5.43 अरब डॉलर का सौदा किया था। रूस भारत को 3 एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम पहले ही सौंप चुका है लेकिन 2 सिस्टम सौंपने में लगातार देरी हुई है। भारत ने एस-400 एयर डिफेंस सिस्ट को 'सुदर्शन चक्र' नाम दिया है जो भगवान कृष्ण के सुदर्शन चक्र से प्रेरित है। भारत रूस से और भी एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम खरीदने वाला है। पिछले महीने रक्षा सचिव आरके सिंह की अध्यक्षता वाली रक्षा अधिग्रहण परिषद ने रूस से 10,000 करोड़ रुपये की लागत से 288 एस-400 मिसाइलों की खरीद के लिए 'आवश्यकता की स्वीकृति' प्रदान की थी। एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम की क्षमता क्या है? इसका शक्तिशाली रडार 600 किलोमीटर की दूरी तक दुश्मन के खतरों को ट्रैक कर सकता है और 400 किमी के दायरे में उन्हें नष्ट करने की क्षमता रखता है। यह 10 मीटर से लेकर 30 किमी की ऊंचाई तक उड़ रहे लक्ष्यों को मार गिरा सकता है।

एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम एक साथ 300 से ज्यादा लक्ष्यों को ट्रैक कर सकता है और उनमें से सबसे खतरनाक 36 से 80 लक्ष्यों को एक साथ निशाना बना सकता है। एस-400 की मिसाइलें Mach 14 (करीब 17,000 किमी/घंटा या 4.8 किमी/सेकंड) की मैक्सिमम स्पीड से उड़ सकती हैं। इतनी तेज गति के कारण दुश्मन के विमानों या मिसाइलों के लिए इससे बचना लगभग नामुमकिन होता है। इसमें चार अलग-अलग श्रेणियों की मिसाइलें (400किमी, 250किमी, 120किमी और 40किमी रेंज) तैनात की जा सकती हैं। इसकी वजह से ये फाइटर जेट्स, ड्रोन, क्रूज मिसाइलों और बैलिस्टिक मिसाइलों के साथ साथ कई बार स्टेल्थ विमानों के खिलाफ भी कारगर हो सकती हैं। एस-400 पूरी तरह मोबाइल सिस्टम है जिसे ट्रकों पर तैनात किया जाता है। इसे युद्ध के लिए तैयार होने में मात्र 5 मिनट का समय लगता है जो अमेरिकी 'पैट्रियट' सिस्टम (25 मिनट) की तुलना में बहुत कम है। रूस भारत को हाई-प्रिसिजन एयर डिफेंस सिस्टम देने को तैयार- दावा इसके अलावा रूस की सरकारी न्यूज एजेंसी आरटी इंडिया ने बताया है कि मॉस्को नई दिल्ली को पैंटसिर शॉर्ट-रेंज एयर डिफेंस सिस्टम की सप्लाई पर विचार कर रहा है। इसे एस-400 का बॉडीगार्ड कहा जाता है। दुश्मन अकसर एस-400 को खत्म करने के लिए ड्रोन और क्रूज मिसाइलों का इस्तेमाल करते हैं। पैंटसिर ऐसे ड्रोन और मिसाइलों को खत्म करता है। सूत्रों के हवाले से आरटी इंडिया ने बताया है कि पैंटसिर-एस1एम सभी तरह के एयरोडायनामिक लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से निशाना बना सकता है जिसमें अनमैन्ड एरियल व्हीकल भी शामिल हैं।

चीन ने बनाया एयर डिफेंस सिस्टम का काल, एटलस ड्रोन स्वार्म सिस्टम का सफल टेस्ट

बीजिंग। चीन ने बुधवार को एक आधिकारिक मीडिया रिपोर्ट में 'एटलस ड्रोन स्वार्म ऑपरेशंस सिस्टम' का पहला पूरा प्रोसेस दिखाया है। ग्लोबल टाइम्स ने एक सैन्य विश्लेषक के हवाले से कहा है कि यह सिस्टम न सिर्फ ड्रोन स्वार्म्स के लिए युद्ध के मैदान में बढ़ते इस्तेमाल को दिखाता है बल्कि एल्गोरिदम-आधारित टेक्नोलॉजी में तेजी से हो रहे डेवलपमेंट को भी दिखाता है। ये टेक्नोलॉजी ऑटोनॉमस तालमेल, सटीक हमले और सिस्टम-स्तर की युद्ध क्षमताओं को संभव बनाकर आधुनिक युद्ध के तरीकों को नया रूप दे रही हैं। चीन के सीसीटीवी न्यूज के सैन्य चैनल ने बुधवार को बताया है कि देश में ही विकसित इस सिस्टम में 'स्वार्म-2' ग्राउंड कॉम्बैट वाहन, कमांड वाहन और सपोर्ट वाहन शामिल हैं। फुटेज में दिखाया गया कि लॉन्च वाहन पर 'चाइना इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी ग्रुप कॉर्प' का लोगो लगा हुआ है। 'स्वार्म-2' ग्राउंड कॉम्बैट वाहन को पहली बार 'एयरशो चाइना 2024' में प्रदर्शित किया गया था, जो दक्षिण चीन के गुआंगडोंग प्रांत

के जुहाई में आयोजित किया गया था।सिस्टम की क्षमता क्या है?- ग्लोबल टाइम्स ने बताया है कि इस सिस्टम का मुख्य हिस्सा यानि स्वार्म-2 ग्राउंड कॉम्बैट व्हीकल है। एक व्हीकल 48 फिक्स्ड-विंग ड्रोन्स को ले जा सकता है और लॉन्च कर सकता है जबकि एक 'कमांड व्हीकल' एक साथ 96 ड्रोन्स को कंट्रोल कर सकता है। एक साथ कई ऑपरेशन को अंजाम देने की क्षमता- ये ड्रोन्स अलग-अलग तरह के उपकरण यानि पेलोड ले जा सकते हैं। इनमें टोह लेने, सीधा हमला करने और संचार करने वाले उपकरण शामिल हैं, जिन्हें जरूरत के हिसाब से मिलाकर इस्तेमाल किया जा सकता है।ऑपरेटर सिर्फ एक- इतनी बड़ी संख्या में करीब 96 तक ड्रोन्स को हवा में कंट्रोल करने के लिए सिर्फ एक ऑपरेटर की जरूरत होती है। ग्लोबल टाइम्स में इसकी तुलना एक अकेले इंसान की तरफ से 100 पतंगों को एक डोर से उड़ाने से की गई है। खुद टार्गेट पहचानने की क्षमता- ग्लोबल टाइम्स ने बताया है कि इस ड्रोन झुंड ने तीन एक जैसे दिखने वाले टार्गेट्स में से असली 'कमांड व्हीकल' को खुद पहचाना, उस पर हवा में ही लॉक किया और बिल्कुल सटीक हमला किया। सुरक्षित लॉन्चिंग- हवा में ड्रोन्स आपस में न टकराएं और उनके बीच सुरक्षित दूरी बनी रहे इसके लिए स्वार्म-2 व्हीकल हर 3 सेकंड में एक ड्रोन लॉन्च करता है। एयर डिफेंस को तबाह करने की ताकत- ग्लोबल टाइम्स ने सैन्य विशेषज्ञ वांग युनफेई के हवाले से अपनी रिपोर्ट में कहा है कि एक साथ इतने सारे ड्रोन्स के हमले से दुश्मन के एयर डिफेंस सिस्टम ओवरलोड हो जाएंगे और उनके लिए बचाव करना लगभग नामुमकिन हो जाएगा। दुश्मन के इलाके में गहरी घुसपैठ- ये ड्रोन्स कम ऊंचाई, धीमी गति और छोटे रडार क्रॉस-सेक्शन की वजह से रडार की पकड़ में आसानी से नहीं आते। इससे ये दुश्मन के इलाके में सैकड़ों किलोमीटर अंदर घुसकर 'डीप-स्ट्राइक' ऑपरेशंस को अंजाम दे सकते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो आज के दौर में जहां काफी मुश्किल युद्धक्षेत्र बन गये हैं और जहां एडवांस टेक्नोलॉजी से युद्ध के फैसले हो रहे हैं वहां ड्रोन युद्ध काफी असरदार हो गया है। ईरान के ड्रोन ने अमेरिका के एयरबेस में तबाही मचा दी है और यूक्रेन ने ड्रोन स्वार्म से रूस के 12 फाइटर जेट और बॉम्बर को एक ही झटके में खत्म कर डाला। ऐसे में ज्यादातर देश ड्रोन स्वार्म की क्षमता को एडवांस स्तर पर ले जा रहे हैं। चीन शायद भारत से कुछ कदम आगे दिख रहा है लिहाजा भारत को एंटी-ड्रोन सिस्टम में भारी निवेश की जरूरत हो सकती है।

कम उम्र में गंजेपन का सामना,सुपरस्टार बनने का अधूरा सपना,'धुरंधर' से शानदार वापसी की

मुंबई। कम उम्र में गंजेपन जैसी पर्सनल चुनौतियों और करियर के

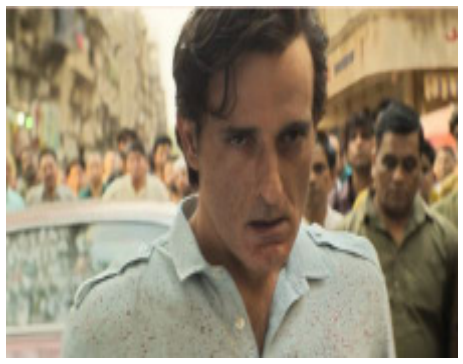

कई उतार-चढ़ाव झेलने के बावजूद अक्षय खन्ना ने कभी खुद पर भरोसा नहीं खोया। सुपरस्टार बनने का उनका सपना भले पूरी तरह साकार न हो पाया हो, लेकिन उन्होंने अपनी दमदार एक्टिंग के दम पर इंडस्ट्री में एक अलग और मजबूत पहचान जरूर बनाई। 90 के दशक में 'बॉर्डर' और 'ताल' जैसी फिल्मों से उन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और दर्शकों के दिलों में जगह बनाई। अक्षय खन्ना ने हमेशा ग्लैमर से ज्यादा अपने किरदारों और कंटेंट को महत्व दिया, यही वजह है कि उनका करियर भले ही पारंपरिक सुपरस्टार जैसा न रहा हो, लेकिन उनकी एक्टिंग को हमेशा सराहा गया। उन्होंने अलग-अलग तरह के रोल्स चुनकर यह साबित किया कि वे हर किरदार में खुद को ढाल सकते हैं।हाल ही में फिल्म 'धुरंधर' में उनके शानदार प्रदर्शन ने एक बार फिर यह दिखा दिया कि वे आज भी अभिनय के मामले में किसी से कम नहीं हैं। उनकी गहराई, स्क्रीन प्रेजेंस और किरदार में पूरी तरह डूब जाने की कला उन्हें खास बनाती है।अक्षय खन्ना उन चुनिंदा कलाकारों में शामिल हैं, जो कम दिखाई देते हैं, लेकिन जब भी पर्दे पर आते हैं, अपनी छाप छोड़ जाते हैं और साबित करते हैं कि असली खिलाड़ी वही होते हैं, जो वक्त के साथ खुद को साबित करते रहें।'हिमालय पुत्र' से 'ताल' तक

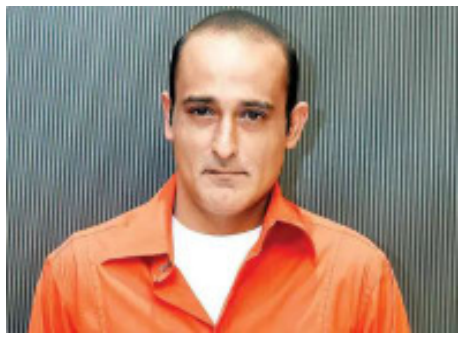

अक्षय का सफर- अक्षय खन्ना ने 1997 में फिल्म 'हिमालय पुत्र' से अपने करियर की आधिकारिक शुरुआत की, जिसे उनके पिता विनोद खन्ना ने प्रोड्यूस किया था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खास खड़खड़ाहट नहीं पैदा कर पाई, लेकिन इस दौर में उनका नाम जुड़ा रहा उन उभरते युवा अभिनेताओं की लिस्ट में, जिन्हें पिछली पीढ़ी के स्टार्स ने अपने बच्चों के तौर पर नहीं, बल्कि अभिनय की क्षमता के आधार पर देखा। उसी साल रिलीज हुई 'बॉर्डर' ने एक बार फिर साबित कर दिया कि अक्षय खन्ना सिर्फ स्टार किड नहीं, बल्कि एक अलग स्टाइल और इंटेंसिटी लेकर आए अभिनेता हैं। जे.पी. दत्ता की इस मल्टीस्टारर फिल्म में उनकी डिलीवरी ने न केवल क्रिटिक्स का ध्यान खींचा, बल्कि यह फिल्म उनके करियर की एक ऑल-टाइम ब्लॉकबस्टर बन गई। 1999 में सुभाष घई की फिल्म 'ताल' ने उनके लुक, स्टाइल और भावनात्मक गहराई को नई ऊंचाई दी। फिल्म में उनका रोमांटिक किरदार दर्शकों को खासा पसंद आया। यह आज भी उनकी यादगार रोमांटिक फिल्मों में शुमार है। सफल शुरुआत के बावजूद 2000 के दशक की शुरुआत अक्षय खन्ना के लिए चुनौतीपूर्ण रही। 'आ अब लौट चलें' जैसी फिल्मों में काम करने के बावजूद वे लगातार हिट फिल्में नहीं दे पाए। उनकी कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर सकीं, जिससे उनका करियर अस्थिर हो गया। इस दौर में उन्होंने अलग-अलग तरह के किरदार निभाने की कोशिश की, लेकिन लगातार सफल फिल्मों की कमी के कारण वे टॉप स्टार्स की रेस में पीछे रह गए। गंजेपन और असफलता ने तोड़ा आत्मविश्वास-अक्षय खन्ना के करियर का सबसे कठिन दौर वह भी था जब उन्हें कम उम्र में ही गंजेपन का सामना करना पड़ा। मिड-डे को दिए इंटरव्यू में अक्षय खन्ना ने कहा था।

मेरे साथ ये बहुत कम उम्र में होने लगा था। उस समय मुझे ऐसा लगता था जैसे किसी पियानो बजाने वाले का हाथ कट गया हो। एक एक्टर के लिए ये वैसा ही है, क्योंकि आपकी शक्ल-सूरत बहुत मायने रखती है। जब आप इस सच्चाई को स्वीकार कर लेते हैं, तब ये आपको कम परेशान करता है। लेकिन उससे पहले जो अनुभव होता है, वो बहुत मुश्किल होता है। जैसे आप सुबह उठें, अखबार देखें और महसूस करें कि मुझे कुछ भी साफ नहीं दिख रहा, मैं इसे पढ़ नहीं पा रहा हूं। मुझे चश्मे की जरूरत है। आप सोचते हैं कि अचानक क्या हो गया, मेरी आंखें काम क्यों नहीं कर रहीं? मान लीजिए आप एक खिलाड़ी हैं, क्रिकेटर या फुटबॉलर और आपको पता चले कि आपके घुटने की सर्जरी होगी। ये दिल तोड़ने वाला होता है, क्योंकि इससे आपके करियर के एक-दो साल चले जाते हैं। मेरे लिए प्रीमैच्योर बाल्डिंग कुछ वैसा ही था।अक्षय खन्ना की सबसे बड़ी ताकत हमेशा उनकी अभिनय क्षमता रही है। 2001 में आई फिल्म 'दिल चाहता है' उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुई। फिल्म में 'सिड' के किरदार में उनके संयमित और गहराई भरे अभिनय ने दर्शकों और समीक्षकों दोनों का दिल जीत लिया।इसके अलावा अक्षय ने 'हमराज', 'हंगामा' और 'दीवानगी' जैसी फिल्मों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इन फिल्मों ने उन्हें एक वर्सेटाइल अभिनेता के रूप में स्थापित किया, हालांकि व्यावसायिक रूप से वे लगातार सुपरहिट फिल्मों की कतार नहीं लगा सके, और उन्हें बॉलीवुड में सुपरस्टार का दर्जा नहीं मिल पाया। इस पर खुद अक्षय खन्ना का नजरिया काफी साफ और व्यावहारिक रहा है। सुपरस्टार बनने के लिए बड़ी और कल्ट फिल्मों की जरूरत- अक्षय कहते हैं- किसी कलाकार का सुपरस्टार बनना सिर्फ उसकी एक्टिंग या मेहनत पर निर्भर नहीं करता, बल्कि सही समय पर सही फिल्म मिलना बेहद जरूरी होता है। उनके मुताबिक- आपको सुपरस्टार बनाने का काम फिल्में करती हैं। जब तक आपके पास 'गदरः एक प्रेम कथा', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' और 'हम

आपके हैं कौन' जैसी बड़ी और कल्ट फिल्में नहीं होतीं, तब तक उस स्तर तक पहुंचना मुश्किल है। सुपरस्टार बनना खुद के हाथ में नहीं होता है-अक्षय ने यह भी माना कि एक कलाकार के हाथ में बहुत सीमित चीजें होती हैं। वह सिर्फ अपनी तरफ से पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ काम कर सकता है, लेकिन किसे कौन-सी फिल्म मिलेगी, यह काफी हद तक किस्मत और मौके पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा- आप सिर्फ कोशिश कर सकते हैं। अगर आपके नसीब में वैसी फिल्में हैं, तो वो आपको मिलेंगी, नहीं तो नहीं। अपने करियर को लेकर अक्षय खन्ना किसी तरह की कड़वाहट नहीं रखते। उनका मानना है कि उन्हें जो भी काम मिला, उसमें उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश की है और आगे भी वह बेहतर काम करने की उम्मीद रखते हैं। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वह अब पहले से ज्यादा परिपक्व हो चुके हैं और भविष्य में और मजबूत किरदारों के साथ दर्शकों के सामने आना चाहते हैं। फिल्म 'तारे जमीन पर' में अक्षय खन्ना काम करने वाले थे। लेकिन फिल्म आखिरकार आमिर खान के हाथ चली गई। मिड-डे से बातचीत के दौरान अक्षय खन्ना ने बताया था कि फिल्म के लेखक-निर्देशक अमोल गुप्ते ने उन्हें स्क्रिप्ट सुनाने का प्रयास किया, लेकिन आमिर ने इसे पहले सुन लिया और फिल्म करने का फैसला कर लिया। अक्षय खन्ना ने बताया कि 'तारे जमीन पर' के लिए लेखक अमोल गुप्ते चाहते थे कि वे खुद उनके साथ फिल्म करें।

उन्होंने आमिर से संपर्क किया क्योंकि वे आमिर के दोस्त थे। कहा, 'मैं वास्तव में अक्षय को यह कहानी सुनाना चाहता हूं। मैं उन्हें नहीं जानता, लेकिन तुमने अभी उनके साथ 'दिल चाहता है' में काम किया है। क्या तुम उनसे फोन पर कह सकते हो कि मैं उन्हें एक स्क्रिप्ट सुनाना चाहता हूं?' आमिर ने उनसे कहा कि मैं तब तक किसी स्क्रिप्ट को रेकेमेंड नहीं कर सकता, जब तक मैं खुद उसे न सुन लूं। इसलिए पहले मुझे सुनाओ और अगर यह मुझे पसंद आ गई तो अक्षय को बताऊंगा। आमिर को ये स्क्रिप्ट इतनी पसंद आई कि उन्होंने ही खुद वो फिल्म कर ली 'तारे जमीन पर'' 2007 में रिलीज हुई और बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही। आमिर ने फिल्म के निर्देशन और प्रोडक्शन का जिम्मा खुद लिया और साथ ही मुख्य भूमिका भी निभाई। फिल्म ने बच्चों की शिक्षा, उनकी कल्पनाशीलता और माता-पिता के रिश्तों पर एक नया दृष्टिकोण पेश किया। अक्षय ने बताया कि उन्हें यह अवसर छोड़ने में अफसोस नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड में ऐसे मौके आते-जाते रहते हैं और कभी-कभी चीजे हमारे हाथ से चली जाती हैं।अक्षय खन्ना उन अभिनेताओं में रहे हैं जो लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करते हैं। उनके करियर में कई बार लंबे गैप आए। यहां तक कि एक समय ऐसा भी आया जब उन्होंने लगभग 5-6 साल तक फिल्मों से दूरी बना ली। इस तरह के ब्रेक को लेकर इंडस्ट्री में भी चर्चा रही कि वह अपने तरीके से काम करना पसंद करते हैं। अक्षय खन्ना कहते हैं- मैंने कुछ समय के लिए खुद ही फिल्मों से दूरी बना ली थी। उस वक्त शायद लगा कि ब्रेक लेना ठीक रहेगा, लेकिन बाद में समझ आया कि इंडस्ट्री में अगर आप रुक जाते हैं, तो लोग मान लेते हैं कि आप अब काम नहीं कर रहे। फिर वापसी करना आसान नहीं होता। जब मैं वापस आया, तो मुझे काम मिलने में दिक्कत हुई।फिल्म बनाना भी एक लंबी प्रक्रिया है। अच्छी स्क्रिप्ट मिलना, सही प्रोजेक्ट का इंतजार करना,ये सब समय लेते हैं। इसलिए भले ही मैं ज्यादा काम करना चाहता हूं, लेकिन चीजें अपने समय से ही होती हैं। दमदार वापसी और नई ऊंचाइयां-लंबे ब्रेक के बाद अक्षय खन्ना ने 2017 में फिल्म 'मॉम' से शानदार वापसी की, जिसमें उनके नेगेटिव किरदार को काफी सराहा गया। इसके बाद 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' और 'सेक्शन 375' जैसी फिल्मों में उन्होंने अपनी एक्टिंग का लोहा मनवाया। इसके बाद उनके करियर का सबसे मजबूत फेज शुरू हुआ। 'दृश्यम 2' में उनका सख्त और प्रभावशाली पुलिस ऑफिसर का किरदार दर्शकों को खूब पसंद आया। वहीं फिल्म 'छावा' में औरंगजेब के किरदार में उनकी खूब तारीफ हुई। फिल्म में अक्षय के वनलाइनर, हाव-भाव और प्रॉस्थेटिक मेकअप ने उनके रोल को यादगार बना दिया।वहीं, 'धुरंधर' ने अक्षय खन्ना के करियर को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। इस फिल्म मे गैंगस्टर रहमान डकैत के किरदार में उन्होंने जिस गहराई और निभाया, उसने उन्हें एक बार फिर चर्चा के केंद्र में ला दिया। यह फिल्म उनके करियर की सबसे बड़ी सफलताओं में गिनी जा रही है और दर्शकों के साथ-साथ समीक्षकों से भी उन्हें जबरदस्त सराहना मिली।

'सफर ही मेरी मंज़िल हैः कंचन अवस्थी की अनकही कहानी और करियर का जज़्बा'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क' मुंबई। आज की युवा और बहुमुखी प्रशिक्षित गायिका भी हैं। उन्होंने थिएटर किया है और अब भी करती

प्रतिभाओं में से एक, कंचन अवस्थी ने अपने करियर और जीवन के दृष्टिकोण के बारे में खुलकर बातचीत की। उन्होंने कहा, 'मुझे कहीं नहीं पहुँचना है।' यह वाक्य पहली बार सुनने में अजीब लग सकता है, लेकिन कंचन के लिए इसका मतलब स्पष्ट है - उनका ध्यान मंज़िल पर नहीं, बल्कि सफ़र पर है। कंचन अवस्थी का मानना है कि सफ़र में ही असली सुकून, संतुष्टि और शायद शांति भी है। उन्होंने साझा किया कि सफ़र में वह खुद को रिडिस्कवर करती हैं, अपनी सीमाओं को चुनौती देती हैं, और हर दिन को एक नए एडवेंचर की तरह जीती हैं। उनका कहना है, 'मेरे लिए सफ़र में बने रहना ही सफलता है।' कंचन ने अपने करियर की शुरुआत से लेकर आज तक की चुनौतियों के बारे में भी बताया। उनके अनुसार, सबसे मुश्किल समय था लखनऊ से मुंबई का पहला सफ़र तय करना। परिवार को अपने फैसले के लिए यकीन दिलाना और खुद पर भरोसा करना उनके लिए सबसे बड़ा संघर्ष था। लेकिन एक बार यह चुनौती पार कर ली, तो उनके लिए सब कुछ आसान हो गया। वह आगे कहती हैं, 'मैं ना तो किसी रेस में हूँ, ना कोई टारगेट है, मुझे बस अलग-अलग किरदार जीना है और उनकी कहानियाँ बतानी हैं। यही मेरे लिए सफलता है।' कंचन अवस्थी की बहुमुखी प्रतिभा उनके करियर में भी झलकती है। वह न केवल एक प्रशिक्षित अभिनेता हैं, बल्कि एक रहती हैं। इसके साथ ही उन्होंने मैनेजमेंट का कोर्स भी किया है, जिससे वे फिल्म और टीवी इंडस्ट्री को बेहतर समझती हैं। अब तक उनके द्वारा किए गए काम की बात करें तो उन्होंने टीवी पर कई चर्चित प्रोजेक्ट्स में काम किया है, जिनमें 'आती रहेंगी बहारे' और 'अम्मा' प्रमुख हैं। उन्होंने फ़िल्मों में भी अपने अभिनय का लोहा मनवाया है, जैसे 'भूत वाली लव स्टोरी' और 'गन वाली दुल्हनिया'। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर प्रकाश झा प्रोडक्शन की 'संकल्प' में भी उनकी भूमिका दर्शकों को भा चुकी है। इसके अलावा, वे भारत की पहली एआई बेस्ड फिल्म 'बिजुरिया'ङ में लीड रोल निभा रही हैं। कंचन ने कहा कि वह मीडियम, प्लेटफार्म या भाषा को महत्व नहीं देतीं। उनके लिए महत्वपूर्ण है विविध और अलग-अलग किरदार निभाना और दर्शकों को एंटरटेन करना। इसके अलावा उनका दूसरा पैशन ट्रैवलिंग है। जब भी समय मिलता है, उनका सोलो ट्रैवलर साइड जाग उठता है और वह निकल पड़ती हैं। अंत में कंचन अवस्थी ने अपने जीवन मंत्रा साझा किया - 'बे-मंज़िल, बे-मकसद घूमते रहना।' उनका उद्देश्य केवल अपने दर्शकों और पाठकों के दिल में जगह बनाना और लगातार उन्हें एंटरटेन करना है। कंचन अवस्थी की यह कहानी न केवल उनके करियर की प्रतिबिंब है, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणा भी है जो जीवन में सफ़र का आनंद लेना चाहते हैं

व्हाइट शर्ट में दिखीं अवनी सिंह राजपूत, 'मिस यूनिवर्स टीन' जैसी खूबसूरती ने जीता दिल-सोशल मीडिया पर मचा धमाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)मुंबई। हाल ही में सोशल

मीडिया पर उभरती मॉडल अवनी सिंह राजपूत की कुछ तस्वीरें तेजी से वायरल हो रही हैं, जिसमें वह व्हाइट शर्ट में बेहद आकर्षक और कॉन्फिडेंट अंदाज़ में नजर आ रही हैं। उनके इस सिंपल लेकिन स्टाइलिश लुक ने फैंस का दिल जीत लिया है। फैंस ने कमेंट सेक्शन में अवनी सिंह राजपूत की तुलना 'मिस यूनिवर्स टीन' जैसी खूबसूरती से करते हुए उन्हें 'मल्लिका-ए-हुस्न' तक कह दिया। उनकी नेचुरल ब्यूटी और ग्रेसफुल पर्सनैलिटी की जमकर तारीफ हो रही है। अवनी सिंह राजपूत के सोशल मीडिया पर फिलहाल करीब 221के फॉलोअर्स हैं, और उनकी फैन फॉलोइंग लगातार तेजी से बढ़ रही है। मॉडलिंग की दुनिया में अपनी पहचान बना चुकी अवनी अब ओटीटी प्लेटफॉर्म और बॉलीवुड की ओर कदम बढ़ाने की तैयारी में हैं। सूत्रों के मुताबिक, अवनी सिंह राजपूत को कुछ वेब सीरीज और फिल्मों के लिए ऑफर भी मिल रहे हैं, जिससे उनका करियर नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ता नजर आ रहा है। अवनी सिंह राजपूत की बढ़ती लोकप्रियता और टैलेंट को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले समय में वह एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री का बड़ा नाम बन सकती हैं।

चेहरा छुपाकर थिएटर पहुंचीं एक्ट्रेस यामी गौतम,बहन सुरीली के साथ देखी धुरंधर 2

मुंबई। आदित्य धर की पत्नी और एक्ट्रेस यामी गौतम छुपकर थिएटर में धुरंधर 2 देखने पहुंची

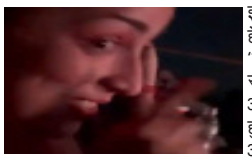

हैं। फिल्म की सफलता के बीच एक्ट्रेस यामी गौतम का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। यामी अपनी बहन सुरीली गौतम के साथ गुपचुप तरीके से सिनेमाघर में यह फिल्म देखने पहुंचीं। खास बात यह रही कि थिएटर दर्शकों से भरा हुआ था, लेकिन किसी को पता नहीं चला कि उनके बगल में खुद फिल्म की एक्ट्रेस बैठी हैं। यामी गौतम ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वह थिएटर के अंदर बैठी नजर आ रही हैं। पहचान छुपाने के लिए यामी ने अपना चेहरा कवर कर रखा था। वीडियो में वह अपनी बहन सुरीली को इशारा करके चुप रहने को कह रही हैं ताकि आस-पास के लोग उन्हें पहचान न लें।यामी गौतम की बहन सुरीली गौतम ने इस फिल्म को 'मास्टरपीस' बताया है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'एक बार फिर आदित्य धर को सलाम। हमें आप पर गर्व है। आपकी सफलता का जश्न मनाते हुए हम बहुत खुश हैं।' सुरीली ने अपनी बहन यामी को अपनी 'ताकत और लक' बताते हुए उन्हें ढेर सारा प्यार दिया। यामी ने भी बहन का शुक्रिया अदा किया और वीडियो में अपने कैमियो (विशेष भूमिका) को देखकर शरमाती नजर आईं।'धुरंधरः द रिवेंज' सिर्फ कमाई ही नहीं कर रही, बल्कि इतिहास रच रही है। रिलीज के महज 8 दिनों के अंदर इस फिल्म ने कुल 32 रिकॉर्ड्स तोड़ दिए हैं। फिल्म ने 8 दिनों में वर्ल्डवाइड 1,080 करोड़ रुपए का ग्रॉस कलेक्शन कर लिया है। वहीं, भारत में पहले हफ्ते में फिल्म ने 674.17 करोड़ का नेट कलेक्शन और 805.32 करोड़ का ग्रॉस कलेक्शन किया है।

शकीरा के संघर्ष के सफलता के रास्ते में थे बहुत से कांटे,शुरुआती एलबम फ्लॉप रहे, हैमरेज भी हुआ,बनाई जगह टॉप पर

मुंबई। पॉप स्टार शकीरा अप्रैल में अपनी भारत यात्रा को लेकर फिलहाल चर्चा में हैं। 'वक्का-वक्का' की धुनों पर पूरी दुनिया को नचाने वाली शकीरा का करियर बेहद उतार-चढ़ावों

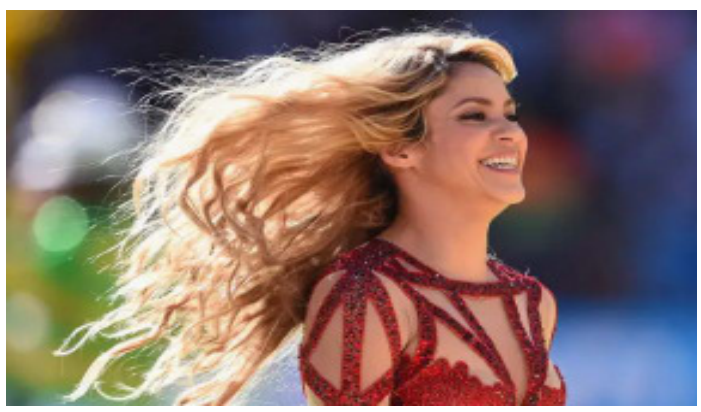

से भरा रहा है। जानते हैं, गाना लिखना, उसे गाना और हर बीट पर सटीक डांस मूव देना,

कोलंबिया की विश्वविख्यात पॉप स्टार शकीरा इन सभी हुनरों का शानदार कॉम्बिनेशन हैं। लेकिन स्कूल में उनकी आवाज टीचर को नहीं भायी थी। स्कूल में मजाक उड़ाया जाता कि उनकी आवाज बकरी जैसी है। बारांक्विला शहर में 2 फरवरी 1977 को जन्मी शकीरा आज स्पेनिश और अंग्रेजी के साथ आधा दर्जन भाषाओं की गायकी में पारंगत हैं। शकीरा जब 7-8 साल की थीं, तो उनके पिता विलियम मेबारक को ज्वैलरी व्यवसाय में भारी घाटा हुआ। शकीरा ने घर का सामान, फर्नीचर, कार सब बिकते हुए देखे। उन्हें इससे मानसिक आघात पहुंचा। 13 वर्ष की उम्र में उन्हें पहला कॉन्ट्रैक्ट मिला। 1991 में पहला एलबम 'मैगिया' और 1993 में दूसरा 'पेलिग्रो' आया, लेकिन दोनों ही बुरी तरह फ्लॉप रहे। विफलता के चलते उन्हें करियर से एक साल ब्रेक लेना पड़ा। 2017 में एल-डोराडो वर्ल्ड ट्यूर से ठीक पहले उनकी वोकल कॉर्ड में हैमरेज हो गया। उन्हें लगा कि अब वे कभी नहीं गा पाएंगी। हालांकि कुछ महीनों के ब्रेक और उपचार से बिना सर्जरी के यह ठीक हो गया। शुरुआती विफलताओं के बाद शकीरा ने खुद को नए सिरे से तैयार किया। खुद अपने गाने लिखने लगीं और फिर 1995 में आया एलबम 'पिएस देस्कालजोस' टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। 2001 में उनका पहला इंग्लिश एलबम 'लॉन्ड्री सर्विस' रिलीज हुआ। इसकी दुनियाभर में 1.3 करोड़ कॉपियां बिकीं और शकीरा वैश्विक स्टार बन गईं। 2010 में उनका 'वक्का-वक्का' गीत फुटबॉल वर्ल्ड कप का एंथम बना, जिसने पूरी दुनिया को शकीरा के सुरों का दीवाना बना दिया। शकीरा को 3 ग्रैमी और 12 लैटिन ग्रैमी समेत संगीत को ढेरों अवॉर्ड मिल चुके हैं। वे संयुक्त राष्ट्र की गुडविल एम्बेसडर रह चुकी हैं। 1997 में शकीरा ने गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए पिएस देस्कालजोस फाउंडेशन शुरू किया था। उनकी नेटवर्थ करीब 300 मिलियन डॉलर बताई जाती है।

पार्टनर चैट्स का स्क्रीनशॉट रखता है,झगड़े में पुरानी बातें ले आता है, फिर सबूत दिखाता है

नयी दिल्ली। आजकल के तनाव भरे जीवन में लोगो के आपसी रिश्ते बहुत उलझ जाते हैं जिसको मनोवैज्ञानिक तरीके से समझना ज़रूरी होता हैं इस विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन कर रही हूं। एक साल से रिलेशनशिप में हूं। मेरा बॉयफ्रेंड मेरी हर बात का रिकॉर्ड रखता है, चैट के स्क्रीनशॉट रखता है। मैंने कब क्या कहा, कैसे कहा, सबकुछ। फिर जब भी हमारे बीच झगड़ा होता है, वो पुराने चैट्स निकालकर दिखाने लगता है। जब पहली बार उसने चैट का स्क्रीनशॉट दिखाया तो मुझे बहुत शॉक लगा था। क्या ये

बिहेवियर नॉर्मल है, क्या ये ट्रस्ट की कमी है या मैं जरूरत से ज्यादा सेंसिटिव हूं? मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं? जवाब- सबसे पहले तो शुक्रिया कि आपने अपनी भावनाओं को शब्दों में इतने अच्छे से व्यक्त किया। कॉलेज लाइफ में रिश्ते की इतनी गहरी समझ होना और ये सवाल पूछना आसान नहीं होता। ज्यादातर लड़कियां ऐसे मामलों में खुद को ही दोष देती रहती हैं, लेकिन आपने सवाल किया यानी आप सजग हैं। ये अपने आप में बहुत बड़ी बात है।आपका सवाल पार्टनर की सिर्फ एक आदत को लेकर नहीं है। यह सवाल इमोशनल सेफ्टी और उस भरोसे को लेकर है, जो किसी भी रिलेशनशिप की बुनियाद है। इसलिए सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि आप जो महसूस कर रही हैं, वह न तो छोटी बात है और न ही आप ओवर-सेंसिटिव हैं। आपकी फीलिंग्स पूरी तरह वैलिड हैं। रिश्ते में अगर हर बात पर सबूत मांगे जाएं, तो अविश्वास पैदा हो सकता है। चलिए, इस समस्या को स्टेप-बाई-स्टेप समझते हैं और देखते हैं कि आप क्या कर सकती हैं।अगर कोई पार्टनर बातचीत के स्क्रीनशॉट संभालकर रखता है और झगड़े के समय उन्हें दिखाता है, तो यह हेल्दी पैटर्न नहीं है। रिकॉर्ड्स कोर्टरूम में जरूरी होते हैं क्योंकि वहां जज को सच और झूठ तय करने के लिए सबूत चाहिए। लेकिन ये समझना चाहिए कि रिश्ता कोर्टरूम नहीं है। इसलिए इसमें सबूत नहीं, समझ, भरोसा और भावनाओं की जरूरत होती है। इस तरह का बिहेवियर टॉक्सिक हो सकता है। रिकॉर्ड रखने का पार्टनर पर क्या असर पड़ता है? ऐसे रिश्ते में इंसान पर अक्सर ये तीन भावनाएं हावी हो जाती हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।